॥ ॐ ॥

उत्तराखंड तीर्थ यात्रा

साधु--प्रज्ञानाथजी विरचिता

केदार संगम गंगोत्री

पो०:--उत्तरकाशी (टिहरी-स्टेट)

❀ श्रीश्रीगौरहरिर्जयति ❀

क्षणदागीतिचिंतामणि

कविवर—

श्रीमनोहरदासजी कृत (संकलित)

卐

सम्वत् २०१७
गौरपूर्णिमा
(फाल्गुनी)

प्रकाशक—
बाबा कृष्णदास,
गवालियर मन्दिर, कुसुमसरोवर
पो० राधाकुंड (मथुरा)

❀ उत्सर्ग-पत्र ❀

परम माननीय, परमविरक्त, श्रीगौरगोविन्दचरणै-
कनिष्ठ, भजनपरायण, गिरिराज तरहटी पूँछड़ी
निवासी श्री बाबा गौरगोविन्ददासजी के पुनीत
स्मरण में उन्हीं के प्रिय शिष्य श्री छगन-
लालजी चौपइया वाला, गोघाट, मथुरा
निवासी की अर्थसहायता से यह
ग्रन्थरत्न प्रस्तुत होकर समर्पित
हुआ है।

—बाबा कृष्णदास
गौरपूर्णिमा (सं० २०१७)

8/23

दो शब्द !

प्रस्तुत ग्रंथ के रचयिता भक्तमाल के टीकाकार श्रीप्रियादासजी के गुरु कविवर मनोहरदासजी हैं। आप ने अपने इस संकलन ग्रंथ में लगभग ब्रजलीला के ४७ महानुभाव कवियों के पदों का संग्रह रख कर अपने हार्द ब्रजलीला का महान् महत्व दिखलाया है। श्रील विश्वनाथचक्रवर्तीजी ने भी उधर अपने पूर्वाचार्य्य महानुभावों के पदों का संग्रह कर वंग-भाषा के पदों को महत्व दिया। दोनों ग्रंथ ही चणदागीतिचिंतामणि नाम से प्रसिद्ध हुए। चक्रवर्त्ती जी का संग्रह पश्चिम विभाग नाम से ख्यात है। रात्रिकाल में लीलास्मरण करने के लिये ये दो ग्रंथ लीलास्मरणकारी गौड़ीय व अन्य वैष्णवों के जीवन रूप माने जाते हैं। प्रस्तुत ग्रंथ में निकुंज विहार को क्रोड़ीकृत करते हुए राधागोविन्द के शृंगार सम्बन्धी ब्रजलीला का सरस वर्णन है। यह ब्रजलीला ही सर्वोपरि तथा निकुञ्ज विहार व नित्य-विहार का प्राण रूप है इसे सुदृढ़ बनाने के लिये ग्रंथकार ने नाना कवियों के पदों का उद्धरण देकर अपने ग्रंथ को सरस बनाया है। कवि ने हर चणदा के पहले अपने उपास्यदेव भगवान् श्रीगौरचन्द्र महाप्रभु के वन्दना रूप मंगलाचरण किया है जो कि गौड़ीय सम्प्रदाय की परिपाटी है जिसे "गौरचन्द्र" कहा जाता है।

पूर्वविभाग की चणदा में—

कृष्णा प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा पर्य्यन्त तीस चणदा हैं जो कि श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ती जी के द्वारा संकलित है। इस में क्रमशः (१) संक्षिप्तसम्भोग, (२) वयः सन्धि, (३) मुग्धानायिका, (४) रूप-विरह, अभिसार, (५) संक्षिप्त-सम्पूर्ण सन्धि,

मुग्धता मध्यता सन्धि, (६) मुग्धा, (७) मध्या, (८) मध्या, (९) मध्या के संकीर्णसम्भोग, (१०) मध्या के सम्पूर्ण सम्भोग, (११) विरह-मिलन, (१२) मिलन, (१३) मिलन, (१४) विरह-मिलन (१५) विरह-मिलन, (१६) पूर्वराग-रूपादिवर्णन, (१७) प्रगल्भा, (१८) विरह, (१९) वासकसज्जा, (२०) मान, (२१) सखी के द्वारा भाव दशा पूछने पर नायिका के द्वारा उसका वर्णन, (२२) प्रगल्भा, (२३) सखी द्वारा कृष्णाग्रे राधा-विरहदशा तथा राधाग्रे श्रीकृष्णदशा वर्णन, (२४) मान, (२५) प्रगल्भा, (२६) मिलन, (२७) मिलन, (२८) सखीद्वारा अभिसार, (२९) अभिसार, मिलन, रास, निकुञ्जविलासादि, (३०) रास, इन विषयों का क्रमशः वर्णन है।

प्रस्तुत इस पश्चिम विभाग की क्षणदा में—

क्रमशः (१) अभिसार, रास-विहार, (२) रास, (३) अनुराग-सखीप्रेरणा, कुञ्जविहार, (४) अभिसार-कुञ्ज में मिलन, (५) श्रीकृष्ण के साथ मिलने के लिये सखी प्रेरणा-मिलन, (६) श्रीकृष्णरूपवर्णन, सखीप्रेरणा, मिलन, (७) मिलन, (८) मान, श्रीकृष्ण के द्वारा मान-मनावनी, कुञ्जविलास, (९) श्रीरूपवर्णन, सखीप्रेरणा, कुञ्जविलास, (१०) कृष्णरूपवर्णन, अभिसार, शय्याविहार, (११) कृष्णानुराग, सखी प्रेरणा, अभिसार, मिलन, शय्याविहार, (१२) सखी के द्वारा भाव-पृच्छा, अभिसार के लिये प्रेरणा, मिलन, (१३) कृष्णभाववर्णन, (१४) कृष्णरूप, सघन निकुञ्ज में विलास, (१५) मान, श्रीकृष्ण के द्वारा मनावनी, सुरतसमर, (१६) श्रीकृष्णानुराग, राधाभिसार, कुंजविलास, (१७) श्रीकृष्णभाववर्णन, सखी के द्वारा प्रेरणा, शरदविहार, (१८) व्रजरस-राधाभिसार, गह्वरवन में विलास, (१९) श्रीकृष्णरूप, सखीप्रेरणा, वनक्रीड़ा, (२०) अपने मनोगत भाव

वर्णन, अभिसार, मिलन, (२१) श्रीकृष्णरूप-सखीप्रेरणा, अभिसार, कुंजविहार, शय्याविहार (पुष्प) (२२) श्रीकृष्णरूप, सखी प्रेरणा, अभिसार, गहवरवन में निकुंजविलास, (२३) नायिका के द्वारा मनोगत भाववर्णन, मिलन, रास, कुंजविहार, (२४) कुंजविलास, (२५) वंशीध्वनि, अभिसार, मिलन-रास (व्रज-युवतियों के साथ) (२६) पुलिनविहार, रास, ललिता के द्वारा लताभवन में दोनों का श्रृंगारादि, (२७) सखीप्रेरणा, नृत्य-विलास-रास, (२८) रासक्रीड़ा, (२९) रात-नृत्य-मण्डलीनृत्य, (३०) शरदरास ।

इस पश्चिमविभाग की चणदा में—

मनोहरदासजी के २१, चतुर्भुजदासजी के १०, कृष्णदास के १५, हरिवल्लभ के ६, गोपाल के १, नन्ददास के १४, विहारिणीदास के ४, गोविन्दप्रभु के १३, स्यामसखी के १, नागरीदास के २, सूरदास के ६, सूरदास मदनमोहन के १७, मुरारीदास के ६, दामोदरहित के ४, हितहरिवंशजी के २४, कुंभनदास के ५, स्वामी हरिदास के ५, सदानन्द प्रभु के ३, हितमोहन के १, परमानन्द के ७, ब्यासजी के ३, चतुरविहारीजी के १, वल्लभजी के ६, विद्यापति श्रीगोपाल के २, गिरिधर के १, जादोप्रभु के १, विठलविपुल के ३, गदाधरप्रभु के ४, श्रीरामरायजी के ४, हरिनारायण श्यामदास के १, गोवर्द्धनेश के १, जगन्नाथ कविराय के ४, बनवारी के २, नरवाहन के १, सीलचन्द्र के १, कविमण्डन के १, हितभगवान के १, किशोरदासजी के २, नवलसखी के २, मथुराहित के १, नामदेव के २, हित-अनूप के १, जनहरिया के १, हितब्रजलाल के १, इस प्रकार कुल पद २२३ हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ में ग्रन्थकार ने यह दिखलाया है कि-व्रजरस ही राधा के साथ श्रीकृष्ण-विहार का महान हृदय है। यह ग्रन्थ व्रज-लीला को लेकर चला है। सब ही आचार्य्य व्रजलीला के उपासक हैं इस बात को सुदृढ़ एवं अपने इस व्रज उपासना को परिपुष्ट के लिये ही ग्रन्थकार ने बहुत महानुभावों के पदों का उद्धरण किया है। इस में अभिसार, खण्डिता आदि नाना भावों का वर्णन है जोकि नित्य-विहार के महान् पोषक हैं। प्रथम क्षणदा में-मनोहरजी के पद में "करत सिंगार चली बर भामिनी कौन गनै काहू की वरजनि" "मति कबहूँ लखि पावै गुरजनि" (दूसरा पद) कृष्णदास जी के पद में-"रास रंग लाल संग नृत्यत व्रजभामिनी" (चौथा पद) "नृत्यत रास में गोपाल संग मुदित घोष नारी" (पांचमा पद)। द्वितीयक्षणदा में-नन्ददास के पद में-"इन वाँसुरी माई सबै चुरायो हरि तो चुराये होते एक ले चीर। असन वसन अरु श्रवण नैंन मन लोक लाज कुल धरम धीर" (दूसरा पद)।

तृतीय क्षणदा-दूसरे पद में "तूतौ बार बार नन्द घर उझ-कत कत आवत जात। संध्या समय फिरि फिरि पाँव धरत जानो न जात यह भेद बात" (चतुर्भुज प्रभु), तीसरे पद में-"काछनि काछि गायनि पाछें मध्य मंडली आवैं"। (गोविंददास)

चौथा पद में अभिसार वर्णन है "निसि के शत्रु सब तेरेरी भामिनी मुखर नूपुर लेउ उतारी" (कृष्णदास प्रभु), 'आठमाँ पद में—''नदनन्दन वृषभानुनन्दिनी नेकु न चाह छुटी" (सूरदास जी)।

चतुर्थी क्षणदा में- "लाल बैठ मग जोवत" "तातें छाडि दै निठुराई" यहाँ मान है। (तीसरे पद)। चौथे एवं पंचम पद

में मान वर्णन है। पंचमी क्षणदा में-तीसरे पद में-"मोपै हिलग हिये में हेली कहा करे कुलकानि" (सूरदासजी)।

पांचमा पद में-"तो विनु कुंवरि कोटि वनिता युत मथत मदन की पीर" (हरिवंशजी)

षष्ठी क्षणदा-चौथा पद में-"कान्ह बोलावति सुन मृगनैनी राधा व्रजभामिनी" (कृष्णदासजी)।

सप्तमी क्षणदा दूसरे पद में पूर्वराग वर्णन है। "जा दिनतें देखें इन नैननि ता दिनतें मोहि अधिक चटपटी"(परमानंदजी)। चतुर्थ पद में-"अति विह्वल ह्वै परे धरणि धुकि तरुण तमाल पवन के जोर। कहुँ मुरली कहुँ लकुट मनोहर कहुँ पट कहुँ चन्द्रिका मार (सूरदासजी)। पाँचमा पद में-"आकुल भई सुनि पिय की पीर"(वल्लभजी)। इन पदों में विरह का वर्णन है।

अष्टमी क्षणदा-छठा पद में—"जदपि वहु नायक कहु न मन अटके तेरे गुण रूप मोहे तोही सों री भाँवरि" (गोविंद प्रभु)। दशमी क्षणदा—दूसरा पद है-"जद्यपि मात पिता मोहे त्रासन महरी भवन में हूँ त्रण हूँ तें हरई" (सूरदास) यहाँ परकीया स्पष्ट है। पांचमा पद में-"जो तु अंग दुराय चलो सग मेरे। मुख मौन व्रत ले अधर ओट करि दसन दामिनी प्रकट तेरे" (चतुर्भुजजी)। ग्यारहवीं क्षणदा में-तृतीय पद में-"निलज भई कुल लाज गंवाई तिनसों कहा वसाई"(सूरदासजी)। चौथे पद में-"चल सखि मदनगोपाल बुलावे" (परमानंदजी)। तेरहवीं क्षणदा-प्रथम पद में-'निसि दिन तोहे जपत प्राणपति' 'छाडि दियो सब कुंजविलास विहार विहारी' (गोविंदप्रभु)। चौथे पद में-'वृन्दावन बैठे मग जोवत वनवारी (सूरदास· मदनमोहनजी) पन्द्रहवीं क्षणदा—चारों पदों में मान वर्णनहै।

(शुक्लाक्षणदा)—

प्रथम क्षणदा—तीसरे पद में–'जिनकैं लिये लोक निंद्रा सब मैं ले दूरि धरी" यहाँ परकीया स्पष्ट है (सूरदासजी)। चौथे पद में—'हों तो अपने ते नहि टरि हों जग उपहास करो बहुतेरो' (सूरदासजी)

छटमाँ पद में–राधा अभिसार वर्णन है (मनोहरजी)।

तृतीय क्षणदा—पहला पद में--"व्रज की खोरि सांकरी"। "जित जित हौं मग रोकत टोकत डगर तजति पग गढ़त कांकरी (सूरदासमदनमोहनजी)। दूसरे पद में—"आजु मिलें पिय सांकरो गली" (गोविन्दप्रभु)। चतुर्थ पद में—'राधा अभिसार' (वल्लभ)। पांचमा पद में-'गह्वर गिरि साँकरी गली' (नागरीदासजी), पंचमी क्षणदा—'घर घर यही चवावो व्रज में मोही सो वैर सुनि सुनि श्रवणनि दुख दहिये' पहला पद में (सूरदासजी), षष्ठी क्षणदा—पाँचमा पद में—राधिका अभिसार वर्णन है। सप्तमी क्षणदा—चौथा पद में--'राधिका अभिसरति विपिन कुंजे'। "सतत गुरुलोक डर चकित आंकों भरत पथ विपथ देखत न सखिन सगे"। यहाँ परकीया स्पष्ट है।

अष्टमी क्षणदा—पहला पद में--"हौं तो भई बाङरी मन्नमोहन वेगि मिलावरी" (सदानन्दप्रभु)।

अष्टम क्षणदा से पन्द्रहवीं क्षणदा पर्य्यन्त रास का वर्णन है। राधावल्लभी सम्प्रदाय के आचार्य्य हितहरिवंशजी विशुद्ध व्रजरस के उपासक हैं यह दिखाने के लिये ग्रन्थकार ने उनके पदों का उद्धरण अधिक संख्या में दिया है। इस ग्रंथ में जिन महानुभावों के पदों का उद्धरण दिया गया है उन में अधिक संख्या गौड़ीय आचार्यों की है।

कविवर मनोहरदासजी श्रीगोपालभट्ट गोस्वामीजी की शिष्य परम्परा में श्रीराधारमण जी के सेवक हुए, जोकि वृन्दावन में उस समय परम रसिक शिरोमणि करके माने जाते थे। ऐसा है कि बड़े बड़े महानुभाव आकर उनके संसर्ग से रसिक बन जाते थे। इनके विषय में प्रियादास जी ने अपने भक्तमाल-टीका के परिशिष्ट में कहा है-"रसिकाई कविताई जाहि दीनी तिन पाई" "रसिक समाज में विराज रसराज कहै" (क० ६२७) श्रीगोपालभट्ट गोस्वामी जी के शिष्य श्रीनिवासाचार्य्यजी, उनके श्रीरामचरण चक्रवर्त्तीजी, उनके रामसरणचट्टराजजी, उनके ग्रन्थकार कविवर मनोहरजी हैं। इनके बनाये हुए राधारमण-रससागर, सम्प्रदाय बोधिनी, रसिक जीवनि, प्रस्तुत क्षणदा-गीतिचिंतामणि ये चारि प्राप्त हैं। राधारमण रससागर का रचना काल सम्वत् १७५७ है। इससे कवि का समय स्पष्ट हो जाता है। श्रीराधारमण रससागर सम्वत् २००८ में हमारे द्वारा प्रकाशित हो चुका है। हाल में सम्प्रदाय बोधिनी भी प्रकाशित हो गई है। क्षणदागीतिचिंतामणि की हस्तलिखित प्राचीन प्रति बहु स्थानों पर मौजूद हैं। उन सब प्रतियों को मिला कर यथा साध्य प्रकाशन किया गया है। आशा है रसिक समाज इसका अनुशीलन व कंठहार कर हमारे परिश्रम का सार्थक्य करेंगे।

इति।

कृष्णदास

卐

8/23

❀ चणदागीतचिंतामणि ❀

प्रथमचणदा

आजानुलम्बितभुजौ कनकावदातौ
संकीर्त्तनैकपितरौ कमलायताक्षौ।
विश्वम्भरौ द्विजवरौ युगधर्म्मपालौ
वन्दे जगत्प्रियकरौ करुणावतारौ ॥

राग—कल्याण (उपताल)

गौर गोपाल रस रास मंडल रसिक मंडली मध्य मंडित सुरंगी। रचित तांडव कला पंडित सिरो रतन बितनु शत कोटि जित चारु भंगी ॥ झमक करताल वर ताल मिलि चचेरी रीझि गति ले बजावत मृदंगी। तान अरु मान कल्यान गति भेद जब लेत सुर सरस तर सुघर संगी ॥ भाव भर भरित गुरु रचित गंभीर गुन गणन अतिरक्त द्रुत कनक अंगी। अरुण कर चरण नख चंद्र की चंद्रिका चमक लख लक्ष कृत बपु अनंगी ॥ बाहु आजानु कृस कटि प्रसर वक्ष में स्वच्छ माला पुहप पंच-रंगी। बदन रदच्छदन सुख सदन सोभा अमित श्रवत घूर्णित नैंन भुव तरंगी ॥ निरखि टक थक्कित मानो लिखि चित्रावली त्रिविध जन ताहि इक तान तंगी। हरसतर तरल अविरल पुलक कुल खचित चकित यत्तत उठावत उच्छंगी ॥ ललित अंग अंग सुवलित कलित माधुरी महक केसर मिलि मदकुरंगी। चरण परि चरण बिन आन नहीं आस जिय दास मनहरण जन करहुँ अंगी ॥

मधुर मधुर धुनि मुरली गरजनि।
करत सिंगार चली वरभामिनी कौन गनै काहू की बरजनि ॥ १

चनक मूँदि अकुलाय द्विरद गति मति कबहूँ लखि पावे गुरजनि। धीरज धरन कहत जब परिजन भौंह चढ़ाऐं चितै हित तर्जनि॥२ भूषण अस्त व्यस्त पहिरी मानो उलटी करि विधिना की सिर जनि। चाहत चकित थकित भई शोचत करत विरोध नितंब पै उरजनि॥ श्रम जल भूषित नख सिख पुलकित बीच बीच अप-घन की लरजनि। राधारमन मिलन नौछावर होत मनोहर चट कत करजनि॥४

(मालव)

अद्भुत नट वेष धरे नाचैं जमुना तट श्याम सुंदर
गुन निधान गिरिवर धर रास रंग मांचैं।
जुवति जूथ संग मिलि गावत केदार राग
अधर वेणु मधुर मधुर सप्त सुरनि साँचैं॥
उरप तिरप लागि प्रगट तत्त थै थै थै
उघटत शबदावलि गति भेद कोउ न वाचैं।
चतुर्भुज प्रभु बन विलास मोहे सकल सुर अकास
निरखि थकित चंद रथहुं पछिम नहीं खाँचैं॥

(मालव)

रास रंग लाल संग नृत्यत ब्रजभामिनी।
मेघ चक्र मध्य बनी मानौ सौदामिनी॥
औघर वर उरप लेत चपल भौंह भामिनी।
उलसित मन मदन केलि मानहुं सौदामिनी॥
गोवर्द्धन धरण लाल रिझवत कर कामिनी।
निरख थकित उडुपति सुख कृष्णदास स्वामिनी॥

नृत्यत रास में गोपाल संग मुदित घोष नारी।
तरु तमाल श्याम लाल कनक वेलि प्यारी॥

चल नितंब किंकिनि धुनि लोल वंक ग्रीवा ।
राग तान मान सहित वेणु गान सीवा ॥
श्रम जल कन भरे से वदन रैनि रंग सोहैं ।
कृष्णदास प्रभु गिरिधर ब्रज युवतिन मोहे ॥

विहरत मंजुल जमुना तीरे । रतिरस कुशल जुगल अति लंपट प्रविसत कुंज कुटीरे ॥ नख सिख अंग परस्पर बरन कुसुमनि वेस बनाये । हरि परस्पर वारत तन मन मनहीं रीझि रिझाये ॥ हंसि हंसि मिलत कतहि कत चुंवत नैननि आनन्द धार । कत कत सरस सिंगार होत यामें मिटत सबहि सिंगार ॥ बाजत किंकिणि नाचत कुंडल मदन महोधि हिलोर । डोलत अरुझत हार परस्पर हसनि चितै चित चोर ॥ मरगज कुसुम सयन अति सौरभ मुदित मधुप कल गान । हरिवल्लभ आलीहु रस निरवधि रूप सुधारस पान ॥

गुनन गुही सुवास भौर फिरे आस पास फुलि रही कंठ लागि अति सुखदाई है । कोमल सुमन जाको तिलो संग किये वन उपजै सुनेह जानै रूप की निकाई है ॥ सीतल परस दृग देखेते सरस अति स्यामलाल फूल देत अधिक छवि पाई है । आजु तौ गोपाल लाल अपनी प्यारी वाल मालती की माला लों विसाल उर लाई है ॥

॥ इति क्षणदागीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे प्रथमक्षणदा ॥

द्वितीय क्षणदा

(कल्याण)

गौर सुंदर सुघर रास मंडल लसत । सरस सुर गान के तान वस विवश ह्वै सजल लोईन मगन कबहुं गावत हसत ॥

बजत मादक मृदंग उघटत धा धा धलंग रंग भरि कर चरण चारण हियो गसत। मिलित करताल धुनि ध्यान गति सबनि मुनि प्रेम रस माधुरी श्रवण रसना रसत ॥ २॥ सुनत हीं त्रिविध जन सबनि के एक मन परम आनंद घन अगम मारग धसत। असन अलाप में प्रसत तन मन करण एसोई भाग या सुख मनोहर लसत ॥ ३

(विहागरो)

इन बाँसुरी माई सबै चुरायो हरि तो चुराये होते एकले चीर।
असन वसन अरु श्रवन नैन मन लोक लाज कुल धरम धीर ॥ १
अधरामृत रस पीयत निधरक ह्वै तातें भई गरब गहीर।
नंददास प्रभु हियो हरि लीनों कासौं कहौं इह प्रेम पीर ॥ २ ॥

(विहागरो)

कुंज महल के आँगन डोले वाहाँ जोरी विहरत राधारमण बिहारी। सुंदर मुख अति सु विलोकनि विधु चकोर बलिहारी॥ अंस मेलि भुज बेलि परस्पर कौतुक करत सुभाई। वचन विलास हुलास सुघर वर कर गहि रीझि रिझाई॥ कुंचित अलक झलक आनन परि चहचरि नैंन की कोर। नासा ललित वलित गज-मोती थरहरानि की जोर॥ अरुण अधर बरषत मधु मानों मुसकनि मंद विकास। कौंधति वरण वरण दसनावलि जब उप-जत कलहास॥ गोर श्याम तन वसन विभूषण जगमग औरें भांति।शोभा सम्पत अमित मनोहर निरख वारणे जात॥ ५॥

—

रसिकवर रसिकनिके रस राशि।
रसिक रमण रसिकन को जीवन युगल परस्पर हांसि ॥१

कोक कला संगीत सिरोमणि अंग अंग लावन्य राशि।
इह रस सम्पत्ति दम्पति पर वलि विमल विहारिणि दासि ॥२
॥ इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे कृष्ण द्वितीया क्षणदा ॥

तृतीया क्षणदा

देखौरी एक गौर मेह। नख शिखतें मानो धर्यौ है देह ॥१
नृत्य करत मानो प्रेम पवन वश। नैन झरत मानौ वर्षा घन रस ॥
वरण वरण आभूषण राजत। मानहुं विज्जुल माला साजत ॥३
विच विच अट्टहास मानो गर्जनि। थर हरात हिय रोम रोम सुनि सुनि ॥ ४ ॥ सींचत स्वजन वेलि मानो उलही। भनत मनोहर नाहिन तुलही ॥ ५

गौडी

तूतौ बार बार नंद घर उझकत कत आवत जात।
संध्या समय फिरि फिरि पांव धरत जानी न जात यह भेदवात ॥
होत न चैन भवन आपनें सखि छिन छिन तेरे कलपजात।
गृहपति की कछु शंक न मानत रैन दिवश एकटक ही वितात ॥२
कहिवत और कहत कछु औरे लागि रहे चित ओरें ही घात।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर छवि निरखत मन अटक्यो इह श्यामलगात॥

गौरी

गिरिधर लालरी मोहे भावै।
ग्रीवा लटकनि नैंन की मटकनि मुरली मधुर वजावे ॥
वरिहा झलकनि गोरज अलकनि गौरी रागहि गावें।
मृगमद तिलक सुधातु विचित्रित वनमाला नैंन सिरावे ॥
काछनि काछि गायनि पाछें मध्य मंडली आवें।
निशि पति सो मुख निरखि गोविंद सुख वासर विरह बुझावे ॥३

कानरो

वेगि चलहि नव रंग निकुंज में खेलत गिरिधर धारी।

नील निचोल सहज तन सुन्दरि तेरी भावति राति अंधियारी ॥ निसिके शत्रु सब तेरे री भामिनी मुखर नूपुर लेउ उतारी । तब लग मिलि जब लग नहिं प्रकटत उडुपति किरण कटक उजियारी ॥ रसिकराय तब केलि कला हित स्वच्छ कमलदल सेज सँवारी । कृष्णदास प्रभु सुरत सुधानिधि सुखनिधान जुवतिन मनहारी ॥

(विहागरो)

कौनसों सुकृत पाय रसिक कुँवरवर । सोहे शिर सेहरो नवल नव नेहरो प्रथम मिलन नैंना भयोरी कलपतर ॥१॥ अति रति रूचि वाढ़ी प्रेम ग्रंथि परी गाँढ़ी वाँह गहि सखी ठाढी गयो है लाज को डर । बैठे हैं कुंज महल तलप सुमन दल स्याम सखी पाये वलि अति रस पायौ भर ॥२॥

पैने नैंना चलत झपकत उखलत ।
पलक चपल कुंडल विलोलित कच आनन पर हलत ।
चुंबन परिरंभन भर ललक लाल ललित ।
नागरिदास अधर पान पिय प्राण पलत ॥

———

रसिकिनी रस में रहत गढ़ी ।
कनक वेलि वृषभानुनंदिनी श्याम तमाल अड़ी ॥
विहरत श्री गिरधरण लाल संग कौनें भांति पढ़ी ।
चतुर्भुजदास निरखि दंपति छवि अति रस केलि बढ़ी ॥२॥

—○—

चलोकिन देखन कुंज कुटी ।
सुंदर श्याम मदनमोहन जहां मनमथ फौज लुटी ॥
नंद नंदन वृषभानुनंदिनी नेकु न चाह छुटी ।

सुरत सेज में लरत अंगना मुकता माल टुटी ।।
उरज तजि कंचुकी चुरकुटि भई कटि तट ग्रंथि खुटी ।
चतुर शिरोमणि सूर नंदसुत लीनी अधर घुटी ॥३॥

इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे तृतीया क्षणदा ॥

चतुर्थी क्षणदा

॥ राग गौरी ॥

विधिना गौर चंद्र सौं नातौ ।
जबतें कियो हियो नहिं आवत दियो जगत करि हाँतो ॥
अब काहू की वात सोहात न कहौ कहा धौं कीजै ।
नैंन चकोर चंद्रिका जीवन विन ध्याये क्यों जीजें ॥२
भई ढीठ सब इठ पीठ दई लई जगत उपहास ।
बन बन फिरत परत कल नाहीं कैसे सोहावे वास ॥३
करि इलाज शरण आवन की और नहीं कछु आस ।
करुणासिंधु अनाथ बंधु सुनि जियत मनोहरदास ॥४

॥ कल्याण ॥

मोहन मुखारविंद पर मनमथ कोटि वारौं री माई ।
जिहि जिहि अंगनि दृष्टि परत है तिहि तिहि परत लुभाई ॥
अलक तिलक कुंडल कपोल की छवि एक रसना मोपै वरनि न जाई
गोविंद प्रभु की वानिक पर वलि वलि रसिक चूडामणि राई ॥२॥

(राग कानरो)

लाल बैठे मग जोवत चनक चनक उतर देत कैसे बने माई ।
तनक तनक रजनी छीजत झनक झनक चलिये बलि जाऊ पण करिहों आई ॥ भई है भवन मूदि चनक कहूँ न सुनिये वनक भनक तनक की सबै बात तातें छांड़ि दै निठुराई ॥ नंददास प्रभु सो एतो नहिं कीजिये तोहि कहा सीख दीजिए तोपै और सीखे चतुराई ॥२॥

(कान्हरो)

प्यारी तोहे बोले रसिक गोपाल री तूँ कत करत नहिं आं । प्रेम समागम रीस काहे कों करत आँसु ढारत अलियुग मुखतैं मकरंद खसि परत शरद कमल महिआं । गिरिधर कुँवर ठाड़े नवनिकुंज के द्वारे पठईरी तोहि लेन कहि आं । कृष्णदास वलिहारी पांय धारिये रसिक कुंवर लालन पहि आं ॥२॥

—o—

राधा जू कौं ललिता मनाय लीए आवत हरिजू के कान परी नूपुर भणक । तलप रचित किसलय दल हाथ रहै अरु श्रंति धुनि भई वाजत झनक ॥ जब जब जाइ भेट भई हरि हियें भरि लई ऐसे फिरि परसत रहत काँसे की ठनक । सूरदास मदनमोहन प्रिय राधा ार वार हँसत बैठे पर्य्यंक कनक ॥२॥

—o—

स्याम निकट सन्मुख होय वैठी श्यामा कंचनमणि आभूषण पहिरे । सांवरे तन में प्रतिबिंबित है मानो स्नान करन पैठी यमुनाजल में गहरे ॥ अंग अंग आभास तरंग गौरता श्यामता सुन्दरता शोभा की लहरें । सूरदास मदनमोहन मोपै कहि न आवत मेरे दृष्टि न ठहरें ॥२॥

—o—

श्यामा तेरे डहडहे नैंन कमल अलि फूले अमल वदन सरोवर अन्तर । सोहत तारे कारे कजरारे मानो बीच परे मधुकर ॥ दुरनि मुरनि चितवनि छवि सों ही लजोही चपलोही अखियन में मनहरन वरुणि तरुणी की छवि निरखि निरखि अपवश कीने नंदकुँवर वर । मुरारीदास प्रभु प्यारी तिहारे ऐसे दृग मृगज सुहाव भाव कटाक्ष लोचन काम दुःख मोचन जीते ही समर सर ॥२॥

॥ कान्हरो ॥

कहत पियासों स्याम लाल ललना कलवानी।
मुख अंचल चंचल गति नैंना निरखि पिया सुख सानी ॥
मृदु मुसकानि भाति नव नागरि लालन नवल केलि रस ठानी।
दामोदर हित अंस वाहु कसि अधर सुधारस पानी ॥२॥

—o—

कुंज महल विहरत वर नागर दौऊरी पिय प्यारी।
दुरि ललितादिक बाहिर सखीजन चितवति रहति सुखारी ॥
गान करत पिक मोर मधुपकुल सुनवति श्रवन सुभारी ।
मुरारि प्राणपति दोउ छवि निरखत कर चटकत तन वारी ॥२

इति गीतचिन्तामरणौ पश्चिमविभागे चतुर्थीक्षणदा।

पंचमी क्षणदा

(कल्याण)

निशिदिन इहै सोच मेरे उर ।
कौन काज ब्रजराज कुँवर वर धारचौ गौर कलेवर ॥१
सुख को परम सदन वृंदावन परिजन निपट सनेह।
सो सुख छाडि वसत नदियापुर समझ परत नहिं एह ॥२
संकीर्तन रस संतत विलसत कौन माधुरी तामें।
भोगी रस सिंगार सार तजि लोभी होइ रहे यामें ॥३
जाकौ भाव करी ऐसी गति सो सबतें अधिकाई।
इह अनुमान मनोहर तन मन चरण कमल वलि जाई ॥४

॥ कान्हरो ॥

वारिज वदन देखि विथकित भये लोचन मधुप लालची मेरे।
मिले जाय अकुलाय अगमने कहा भयो घूंघट पट घेरे ॥१
चंचल चपल अटक नहिं मानत वरवट चितै चपरि भये चेरे ।
काहे कों बावरि वकत वाद ही ईहा को मानत मन्त्र तेरे ॥

चित चुभि रही माधरी मूरति एकहि गांठि केते ही फेरे।
सूरस्याम सुंदर मुख निरखत गये मग विसरि डाहिने डेरे ॥३॥

—०—

हेलि हिलग की पहिचानि।
मोपै हिलग हिये मे हेली कहा करे कुल कानि ॥१
हिलगि पतंग करी दीपक सों तन सों येहै आनि।
कस क्यों नहीं जलन ज्वाला में सही प्राण की हानि॥
हिलग चकोर करी है शशि सों पावक चुगत न मानि।
हिलग हि नाद स्वाद मृग मोह्यो हनत पारधीतानि॥
हिलग हिलाग मिल्यो सब गुण तजि मधुप कमलही जानि।
ऐसेहिं हिलग लाल गिरिधर सों सूरदास हिये जानि ॥४

—०—

तेरे तन की वरण तम हरण देखि श्याम रीझ रीझ पीताम्बर उर धारयो। तैं धारयो नीलाम्बर और श्याम पीत नैंननि काजर न्यारो॥ मन तो हो तो एक पहिलहिं अब तन अदल बदल एकै कीयो इह मैं जीव विचारयौ। सूरदास मदनमोहन श्यामा प्रीत परस्पर निरखि निरखि अपनपौ वारयौ ॥२॥

इमन

चलहिं किन भामिनी कुंज कुटीर।
तो बिनु कुँवरि कोटि वनितायुत मथन मदन की पीर॥
गद गद स्वर बिरहाकुल पुलकित श्रवन विलोचन नीर।
क्वासि क्वासि वृषभानु नंदिनी विलपत विपिन अधीर॥
वंशी विशिख व्याल मालावलि पंचानन पिक कीर।
मलयज गरल हुताशन मारुत शाखामृग रिपु चीर॥
हित हरिवंश परम कोमल चित चली चपल पिय तीर।
सुनि भय भीत वज्र को पंजर सुरति सूर रणधीर।

(विहागरो)

सुंदरता की राशि कपोलनि । कृपा रङ्ग रस नैंन चुहचुहे कोटि अमृतसम हँसि मृदु बोलनि ॥१॥ भाल तिलक मृगमद रूचि सौं सखि भौंह विलास मन मथत कपोलनि ॥ कानन कनक फुल कुंचित कच मोहन वरह मुकुट की डोलनि । मुरली कुणित उदार अधर वर नख रूचि अंक मणि निरमोलनि ।। शोभित तामें कनक की सम्पुट भूषण नंद दिये वहु मोलनि ॥३॥ नव निकुंज में पिया रस वस भये सहस्र कला अंचल झक झोलनि । कहे कृष्णदास लाल गिरधर पिय मन भावनि कंचुकि वंद खोलनि ॥४

--०--

मदन मोहन संग विलसत गोरी । नवल किशोरी वृषभानुनंदिनी प्यारी मधुर हँसति अति रस में वोरी । नव नव प्रीत परस्पर अरूझी मानो घन दामिनी राजत जोरी ॥ मुरारी प्राणपति दृढ़ परिरम्भन प्रेम मगन वनमाला तोरी ॥२॥

—०—

नवल किशोर नवल नागरिया ।
अपने भुजा श्यामभुज ऊपर श्याम भुजा अपने उर धरिया ॥१
करत विनोद तरणि तनया तट श्यामाश्याम उमगि रस भरिया ॥
यौं लपटाई रही उर अंतर मरकत मणि कंचन जैसे जरिया ॥२
उपमा को घन दामिनि नाहीं कन्दर्प कोटि वारने करिया ॥
कृष्णदास वलि वलि या जोरी पर नंदनंदन वृषभानु दुलरिया ॥३

इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे पंचमीक्षणदा

षष्ठी क्षणदा

(कानरो)

आजु मैं गौरचन्द मुख देख्यौ ।
सुंदरता को सार रंग गहि विधिना चित्र विशेख्यौ ॥१

नैंन कमल गुण असित सितारुण तारुण ता मध्य झलकैं ।
भुज भरी बैठे रस मधु पीयत उड़त भवर वर अलकें ॥२
अरुणित अधर नासिका उन्नत चिवुक चारु सुख देन ।
वंधुक चम्पक मुकुल जलज दल उपहासति मानो मैंन ॥३
ज्यों देखत ज्यों आवत तबहिं नहिं आवत बिनु देखें ।
ऐसी लगन मगन के आगे कौंन मनोहर लेखें ॥४॥

(गौरी)

हरयो मन चपल चितवनि चारु ।
चकित तामरस लोहित लोचन निरखत नंदकुमार ॥१
बुद्धि विथकी वल विकल सकलअङ्ग विसरयो गृह व्यौहार ॥
कुम्भनदास लाल गिरधर विनु और नहीं उपचार ॥२

श्याम कपोलन में कनक कुण्डल झाईं ।
कुंचित केशनि बीच राखी चंपकली अरूझाई ॥१
विश्वमोहन मोहन देखत मनमथ रह्यौ लुभाई ।
गोंविंद प्रभु के अङ्ग अङ्ग पर वारों कोटि जुन्हाई ॥२।३

(कांनरो)

कांन्ह बोलावति सुन मृगनैंनी ए राधा व्रजभामिनी ।
सुनि मन मुग्ध विफल जाति हेरी तु कुसुमाकर जामिनी ॥१
काम रतन सुख आगर नागरि तू अनुरूप की कामिनी ।
लै मिलि भेंटि उरज उर सफल उ राजहंस गति गामिनी ॥
कृष्णदास स्वामी गिरिधर प्रिय तु युवतिनकी स्वामिनी ।
दुहु भुज बीच बनी अति सोहइ मांनों मेघ सौदामिनी ॥३।४

(कानरो)

प्यारी तेरौ वदन अमृत की पंक तामें बिधे नयन दोई ।
चित चल्यो काढ़ने कौं विवि कुच संधि सम्पुट में रह्यो भोई ॥

बहुत पाय आहिरी प्यारी परत न कन सोई।
हरिदास के स्वामी श्यामा कुंजबिहारी ऐसे रहौ होई ॥२

(त्रिमन गौरी)

इन बोलनि पर हौं वारी।
हात गहे बतरात परस्पर रूप छके पिय प्यारी॥
कोउ कोउ बातन मानत भामिनि लाल करत मनुहारी।
सदानंद प्रभु बात बनावत सुनि बिहँसी सुकुमारी ॥२॥

(विहागरो)

आजु वन क्रीड़त श्यामा श्याम।
सुभग बनी निसि सरद जामिनी रूचिर कुंज अभिराम ॥१
खंडन अधर करत परिरम्भन एँचत जघन दुकूल।
उर नखपात तिरीछी चितवनि दम्पति रस समतूल ॥२
वै भुज पीन पयोधर परसत वाम दृशा पिय हार।
वसननि पीक अलक आकरषत समर समित शतमार ॥३
पल पल प्रबल चौंप रस लंपट अति सुन्दर सुकुमार।
हित हरिवंश आजु तृण टूटत हौं वलि विशद विहार ॥४॥

(रापसा)

निरखी सखी सुख सैन कौं पौढ़े प्रिय प्यारी।
नैंन बैंन आलस भरे कसिकें अंक वारी॥१
मरगजे वसन विराजहीं सौंधे अङ्ग भीने।
दरसति दम्पति देह दुति ओढ़े पट झीने॥२
भये कपोल तबोल युत अद्भुत छवि पावें।
रदन सदन सुख सम्पदा कहि कापैं आवें॥
अलबेली आलिगन एंडाए जंभानी।
हित मोहन मन में खुभी ईपद मुसकानी॥८

इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे षष्ठी क्षणदा

सप्तमी क्षणदा

॥ कान्हरो ॥

अद्भुत एक देखे मैं आज । कनक धराधर कीर्त्तन माँझ ॥१
थावर कबहु कबहु जंगम गति । कबहुक फिरत चक्र की आकृति ॥
ऊपर तें झरणा वहि आवति । गहवर मधि केहरि गुंजरावति ॥३
चहुँदिश तैं मुकलित वनराई । बिच बिच कोईल कुँहुक निमाई ॥४
धरणि कंपावति कंपनिकाई । मुदित मनोहर बलि बलि जाई ॥५

—०—

गिरधर बांधे माई पाग लटपटी ॥
जा दिनतें देखे इन नैंननि ता दिनतें मोहि अधिक चटपटी ॥१
चलहिं जात मुसकात मनोहर हँसि जो कही एक बात अठपटी ।
हों सुनि श्रवन भई अति आतुर हृदय परी मेरे मदन सटपटी ॥२
कहारी करौं गुरुजन भये वैरी निशिवासर मोसों करत खठपटी ।
परमानंद प्रभु रूप विमोहित नंदनंदन सों प्रीत अति जटी ॥३॥

ईमन

माई री श्याम लग्यौ संग डोलै ।
जित ही जाऊँ तितही रोकत है अनबोलाये बोले ॥ १
कहा करौं नैननि लोभिन सों वश कीनि बिन मोलें ।
कुम्भनदास लाल गिरिधर पिय हँसि करि घूँघट खोले ॥२

—०—

चितयो चपल नैन की कोर ।
मनमथ दुसह वान अनियारे निकसे फूटि हिये दुहु ओर ॥१
अति विह्वल है परे धरणि धुकि तरूण तमाल पवन के जोर ।
कहुँ मुरली कहुँ लकुट मनोहर कहुँ पट कहुँ चन्द्रिका मोर ॥२
वचन न फुरत नैन न उघरत ऐसे क्रमल भये विनिभोर ।
प्रेम सलिल भीज्यौ पिय के उर पौंछि निचोरत अंचल छोर ॥३

छिन बूड़त छिन ही छिन उछरत विरह समुद्र के परे हिलोर ।
सूर अधर मधु सींच जियावों जागे मूरछित नंदकिशोर ॥४

॥ कान्हरो ॥

आकुल भई सुनि पिय की पीर । नहिं सँभारत लोचन नीर ॥१
अस्त व्यस्त करि भूषण चीर । पहिरि चली यमुना के तीर ॥
गुरुकुल लाज शील मति धीर । प्रेम कृपाण करे चहु चीर ॥३
जाइ मिली जब कुंज कुटीर । तब वल्लभ मन भये सुधीर ॥४॥

(विहागरो)

नव निकुंज किशोर किशोरी करत हास परिहास ।
प्रीतम पाणि उरज वर परशत प्रिया दुरावति वास ॥१
कामिनि कुटिल भ्रकुटि अवलोकति दिन प्रति पद प्रतिकूल ।
आतुर अति अनुराग विवश हरि धाइ धरत भुज मूल ॥२
नागर नीवि बन्धन मोचत एंचत नील निचोल ।
वधू कपट हठ कोप करत कल नेति नेति मधुबोल ॥३
परिरम्भन विपरीत रति वितरत सरस सुरत निजु केलि ।
इन्द्र नीलमणि मय तरु मानो लसत कनक की बेलि ॥४
रतिरण मिथुन ललाट पटल पर श्रम जल सीकर संग ।
ललितादिक अंचल झकझोरत मन अनुराग अभंग ॥५
हित हरिवंश यथामति वरणत कृष्णरसामृत सार ।
श्रवण सुनत प्राय करति राधा पद अंबुज सुकुवार ॥६

—०—

हौं बलि जाऊँ नागरि श्याम ।
ऐसे ही रंग करौ निशि वासर वृन्दा विपिन कुटी अभिराम ॥१
हास विलास सुरत रस सींचत पशुपति दग्ध जिवावत काम ।
हित हरिवंश लोल लोचन अलि करहु न सफल सकल सुखधाम ॥

—०—

पौढ़े राधिका के संग । रचित सेज सुगन्ध शीतल रतन जटित पर्जंक । नव किसोर नवल किसोरी गौर स्याम अङ्ग ॥१॥ दशन खण्डित वदन वीरी भरे रति रस रंग ॥ २ ॥ रसिकनि संग रसिक गिरिधर मुदित जीति अनंग । उपजत चतुर्भुजदास दुहुँ दिशि प्रेम सिंधु तरंग ॥३॥

इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे सप्तमीकृष्णाक्षणदा ॥

अष्टमी क्षणदा

अडानो

काहे को मान बढ़ावत हो बाल मृग लोचनि ।
हौं बड़ रति कछु कहि न सकति एक बात संकोचनि ॥१
मत्त मुरली अंतर तब गावत जागत शयन तवाकृति शोचनि ।
हित हरिवंश महामोहन पिय आतुर अति विरहज दुःख मोचनि॥२

(विहागरो) इमन

बैठे लाल निकुंज भवन ।
रजनी रुचिर मल्लिका मुकुलित त्रिविध पवन ॥१
तूं सखि काम केलि मनमोहन मदन दवन ॥
वृथा गहरकत करत कृशोदरि कारण कवन ॥२
चपल चली तन की सुधि विसरी सुनत श्रवण ।
हित हरिवंश मिले रस लम्पट राधिकारमण ॥३

कानरो विहागरो ॥ इमन ॥

हौंजो कहति एक बात सखी सुनि काहे कौं डारति ।
प्राणरमण सौं क्यों करहति आगस बिनु आरति ॥१
पिय चितवत तब चंद्रवदन परं तू अधोमुख निजचरण निहारति ।
वै मृदु चिवुक प्रलोइ प्रवोधत तू भामिनि करसों कर टारति ॥२
विवश अधीर विरह अति कातर तू बिनु ओर कछु न बिचारति ।
हित हरिवंश रहसि प्रीतम मिलि तृषित नैंन काहे नहिं प्रतिपालति

(कान्हरो)

खंजन मीन मृगज मद मेटत कहा कहौं नैननि की वातें ।
सुन सुन्दरि कहालों शिखइ मोहन वशीकरण की वातें ॥१
वंक निशंक चपल अनियारे अरुण श्याम सित रचे कहाँते ।
डरत न हरति परायो सर्वसु मृदु मधु मिव मादक दृगपाते ॥२
नैकु प्रसन्न दृष्टि पूरण करि नहि मो तन चित यो प्रमुदाते ।
हित हरिवंश हंस कल गामिनि भावै सुकरौ प्रेम के नाते ॥३

—०—

मेरे तु जिय में वसत नवल प्रिया प्राण प्यारी। तेरे ही दरस परस राग रङ्ग उपजत अरु मान जिनि करौ हाहारी ॥१॥ तू ही जीवन तू ही प्राण तू ही सकल गुणनिधान तो समान नाहिन कोउ मो हितकारी । व्यास की स्वामिनी तेरी मया ते मैं पायो है नाम बिहारी ॥२

केदारो

आज बने लालन आये तेर प्राण करि निछावर । जदपि वहु-नायक कहु न मन अटके तेरे गुण रूप मोहे तोही सों री भांवरि ॥१॥ वैसे री लालन पर तन मन दीजे समुझि सयानि घरि घरि घटत विभावरि। दूती के वचन सुनि मिलीरी गोविंद प्रभु राखे बाँधि सुहाग दामरी ॥२॥

—०—

नवल नागरि नवल नागर किशोर मिलि कुंज कोमल कमल दलनि सेज्या रची । गौर श्यामल अंग रुचिर तापर मिले सरस मणि नील मानो मृदुल कंचन खची ॥१॥ सुरत नीवि निबन्ध हेत प्रिया मानिनी प्रिय की भुजनि में कलह मोहत मची ॥ शुभग श्रीफल उरज पाणि परसत रोष हुंकार गर्व दृग भङ्गि भामिनि लची ॥२॥ कोक कोटिक रभस रहसि हरिवंश हित विविध कल माधुरी किमपि नाहिन बची । प्रणय में रसिक

ललितादि लोचन चषक पिवत मकरन्द सुख रासि अन्तर सची॥३

इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे अष्टमी क्षणदा ॥

नवमी क्षणदा

धनाश्री

हरि हरि कौन कृपा रस एह। धन्य गौड धरणी जहाँ लोकन अवलोकत हरि गौर देह ॥१॥ विनहि जतन नव प्रेम रतन सों सबहिन के यहाँ भरयो गेह। सबही रसिक सबही हरि बल्लभ राजत यहां परस्पर नेह ॥२॥

——

आली मेरे नैंननि ही सब खोरि।
निरखि वदन श्याम सुन्दर को बहोरि नहीं बहोरि ॥१
यद्यपि जतन करति युवति हौ घूँघट ओट अकोरि।
तऊ उडि मिले वधिक को खगलों पलक पींजरा तोरि ॥२
वुधि विवेक बल बचन चातुरी पहिलेइ लई चोरि।
अबतो विवश भई संग डोलति ज्यों गुडिया बश डोरि ॥३
अबधौं कौन हेतु हरि हमसों चितवत हैं मुख मोरि।
सूरदास दोउ सिंधु सुधा भरि उमगि मिले मति फोरि ॥४

(कल्याण)

आज और कालि और दिन प्रति और और देखिये रसिक गिरिराज धरण। छिन प्रति नव छवि वरणे सों कौन कवि नित ही श्रृंगार लागे वरण वरण ॥१॥ शोभा सिंधु अङ्ग अङ्ग मोहित कोटि अनङ्ग छवि की उठत तरङ्ग विश्व को मन हरण। चतुर्भुज प्रभु गिरिधारी को रूप सुधापान कीजै जीजै रहिये सदा शरण ॥२

ईमन

मोहन मोहिनी घाली सिर पर। जोहि मोही रहति निशि वासर जौलों ना देखों ब्रजराज कुँवर वर ॥१॥ यद्यपि धीरज धरी

रहत सखि तदपि मुरली धुनि प्राण हरण कर। अब न रह्यौ परे
गोविंद प्रभु विनु रसिक कुँवर नव घन सुंदर वर ॥२

(विहागरो)

चलो सखि कुंज गोपाल जहां ।
तेरी सौं मदनमोहन पैं चलि ले जाऊँ तहाँ ॥१
कुसुम मन्द मलयानिल और कदंव की छाहां ।
तहां निवास कियो मनमोहन तेरे तन मन महां ॥२
ऐसी बात सुनत व्रज सुंदरि तोहे रह्यौ क्यों जावे ।
परमानंद दास कौ ठाकुर भाग वड़े तो पावे ॥३

———

प्रेम पुंज के कुंज सदन में बैठे करि रूप सिंहासन।
अति आवेश रसिक दोउ जन खेलत हैं दृग पांसनि ॥१
आपन कहत और की न सुनत रीझ रीझ परत है हांसन।
चतुर विहारि विहारिणी को सुख को समुझे इन गांसन ॥२

धनाश्री

नैंनन पर वारौं कोटिक खंजन।
चंचल चपल अरुण अनियारे अग्रभाग बन्यौ अंजन॥
रुचिर मनोहर वक्र विलोकत सुरत समर दल गंजन।
हित हरिवंश कहत न बनें छवि सुख समुद्र मन रंजन ॥२

—०—

जोवन रंग रंगीले सोंने से गात ढरारे नैंन कंठ पोति मखतूली।
अंग अंग अनङ्ग झलकत कानन वीरें शोभा देत देखत ही
बनें जोन्ह में जोन्ह सी फूली ॥१॥ तन सुख सारी लाही अंगिया
अतलस अतरोटा छवि चारि चारि चूरि पहुँचिन पहुँची खमक
बनी नक फूलि जेंव मुख वीरा चौका कौधे सभ्रम भूली। ऐसी
ही नित्य विहारिणी श्री विहारीलाल सौं अति आधीन ज्यों तरु

तमाल लटपटात कुंज द्वार हरिदासी जोरी सुरत हिंडोरे झूली ॥२

सुनहु रसिक जन इह वृंदावन अद्भुत एक जोटि मैं देखी ।
वैसी कछु बनि तैसी मोपै कहि न परै त्रिभुवन महँ लेखी ॥१
इंद्रनीलमणि मय तरु मानो नव जांबूनदलता विसेखी ।
असित सुधाकर गौरचंद्रिका भूतल चकित भये अनिमेखी ॥२
मानहु कनक कसौटी ऊपर मदन स्वर्णकार कृतरेखी ।
मानहु तरुण तमाल मल्लिका नव जलधर सौंदामिनी पेखी ॥३
को इह रूप कहां ते प्रकटित गिरिधर नागर सहज सुपेखी ।
सुनि कृष्णदास स्याम अरु स्यामा मम रहु इह उर अंतर लेखी ॥
इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे नवमी क्षणदा ॥

दशमी क्षणदा

राग-गौरी

तुम मत देखहु गौर हरि । जो चाहौ घर वसति करी । अरुण नयन जल झरत निरंतर । देखत ही सों पैठे अन्तर ॥१॥ पुत्र कलत्र पिता नहिं भावे । अश्रु कम्प पुलकादि करावें ॥ वल्लभ होय कृष्ण गुण नाम । अरु वृंदावन तरुतल धाम ॥२

(इमन)

हरि चितवनि मेरे जिय तें न टरई ।
अटकि रह्यौ सांवरी मूरति में पचिहारी कें हु न निखरई ॥१
यद्यपि मात पिता मोहे त्रासत भइरी भवन में हूँ त्रणहू तें हरई । तदपि रह्यो न परे सुन सजनी बिन देखें उर अंतर जरई ॥२॥ जाकों विगरि पर्‍यो चित चंचल भली बुरी सब सिर पर धरई । सूरदास मन हरिरस अटक्यौ को जाने मीठी अरु करई ॥३॥

(ईमन)

हौं डोलति इन नैंननि की लई ।
कहारी करौं लोभि नैंन के कारण पर आधीन भई ॥
स्याम तमाल मूल मंजुल अवलोकन वेलि बई ।
सींच सींच अनुराग प्रेम जल अनुदिन करत नई ॥
अब कैसे निरवारि जात सखी री अङ्ग अङ्ग ही बौंडि गई ।
विद्यापति श्री गोपाल रस फूली लगी है प्रमोद जई ॥३

—०—

ऐसे गोपाल पर तन मन धन वारौ री ।
नव किसोर मधुर मूरति शोभा उर धारौ री ॥१
अरुण तरुण नैंन कमल मुख सुधा सर राजे ।
ब्रज जन मन हरण वेणु मधुर मधुर बाजे ॥२
ललित वर त्रिभंग अंग वनमाला सोहै ।
कुटिल केश कुसुम पाग उपमा को कोहै ॥३
चरण रुणित नूपुर कटि किंकिणी कल कूजे ।
मकराकृति कुंडल छवि युग कपोल पूजे ॥४

(नट)

जो तु अंग दुराय चली संग मेरे ।
मुख मौन व्रत लै अधर ओट करि दसन दामिनी प्रकट तेरे ॥१
तजि नूपुर ध्वनि छुद्र घंटिका नाद सुनत खग मृग घेरे ।
चतुर्भुजदास स्वामिनी सिंगार चलि अब गिरिधर निकट नेरे ॥२

———

लाडिली लटकि चलत जब प्रिय सन्मुख अलबेली । लटकन में मन लपट्यौ लाल कौ गजगति पगन पेली ॥ कमल फिरावत नैंन दुरावत रीझ रिझावत रमण सहेली । आलि गिरिधर पिय वेणी गूथन कारण लेत है चम्पक बकुल गुलाब चमेली ॥२

राय गिरिधरण संग राधिका रानी। निविड़ वन कुंज नव शैय्या रची रंग मय अंग दुहु बोलत मृदु वानी ॥ नील सारी लाल कंचुकी गौर तन माँग मोतीन खचित सुन्दर सुठानी। अर्ध घूँघट ललन वदन निरखत रसिक दम्पति परस्पर प्रेम रस सानी ॥ लाल तन सुख पाग लटकि शिर पर रही कूलह चमकि भरि सेहरो वानी। पानी सों पानि गहि हृदय लावत ललन गोविंद प्रभु ब्रज नृपति सुरत सुख दानी ॥२

(कानरो)

स्यामा नागरि निकुंज औन किशलय दल रचित सैन कोक कला कुशल कुंवरि अति उदार री। सुरत रंग अंग अंग हाव भाव भ्रकुटि भंग माधुरी तरंग रंग मथित कोटि मार री ॥ मुखर नूपुरनि सुभाव किंकिणी विचित्र राव विरमि विरमि नाथ वदत वर विहार री। लाड़िली किसोर राजहंस हंसिनी समाज सींचत हरिवंश नैंन सुरति सार री ॥=

इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे दशमीकृष्णाक्षणदा ॥

ग्यारहवीं क्षणदा

(विहागरो)

शची के नन्दन आज देखि में चारु। वारिज वदन सुख सदननि मदन कदन मानो लोचन चारु ॥ हाव हुलास वास मुख पाननि अधर विंव अति चारू। तिलक सुचारु अलक कल रोलनि कर्णन कुण्डल गंड नासा चारू ॥ भौंहन सौहन मोमन गौहन मोहन चिवुक सुचारू। कुटिल कुंतल गुच्छ पुच्छ मोर चंद्रिका रचि है पुहप तामें बने अति चारू ॥ कंज करवीर माल वसन किंकिणी कटि गौरवरण अति चारू। नख शिखि अवलोकि अंग अंग पर मदन वारि डारौं जगत की चारू ॥१

———

(कांनरो)

सुरङ्ग लटपटे पेंचनि चीरा पीताम्बर वनमाला कटि सोहैं । घन तन स्याम कीये चन्दन खोरि ठाड़े पोरि पग पावरि कर मुख वीरा । गज मोतीवर द्वयलर ग्रीवा सीमाकरि मानो रूप की तिन मधि जगमगात द्युति हीरा ॥ सूरदास मदनमोहन देखत आली हों जानौं के जाने मेरौ जीरा ॥२

राग नट

इन नैंनन की टेर न पाई ।
कहा करौं वरजत वे अंचल लागत ही उठि धाई ॥
बाट घाट जहां चलत मनोहर तहांऊ चलति वचाई ।
घूँघट पट जलहीन मीन सी अधिक उठत अकुलाई ॥
निलज भई कुल लाज गवांई तिनसों कहा बसाई ।
सूरदास गिरिधर बिनु देखे कछु नहिं तन मन भाई ॥३

———

तू सुनि कान दे री तेरे गुन गावे स्याम कुंज भवन ।
सन्मुख होय करि तोकों आकौं भरत तेरो तन परशि आवे जो पवन ॥ तेरोइ ध्यान धरत उर अन्तर नैंन मूंदि निकसत उर डरपत तेरोइ अगम सुनि श्रवनन । सूरदास मदनमोहन सौं चलि मिलि तोही तैं पायौ है नाम राधारमण ॥

(कानरो)

चल सखि मदनगोपाल बुलावे । तेरो नाम लै वेणु बजावे ॥
इह संकेत वदौं वन माहीं । सघन कदम्ब मनोहर छाहीं ॥
मिलत परम सुख आनन्द लीला । परमानन्द प्रभु भावन शीला ॥

कल्याण

आजु नीकी बनी राधिका नागरी । व्रज युवति यूथ में रूप अरु चतुराई शील शृंगार गुण सबनतें आगरी ॥ कमल दक्षिण भुजा

वाम भुज अंश सखी गावती सरस मिलि मधुर सुर रागरी।
सकल विद्या विदित रसिक हरिवंश हित मिलत नव कुंजवर
स्याम बड़भागरी ॥६

(विहागरो)

शोभा निरखत नैंन सिरात।
नवल जुगल की मिलन खेलन अति आनन्द अङ्ग न समात ॥
पहिले देखि प्रिया मुख सारस विवश भये नन्दलाल।
लोइन मधुकर पान करत मधु मत्त मुदित तिहिं काल ॥
करि उपाह निज नैंन नचाई कें मुख घूँघट पट तांनि।
प्रिया चतुरइ पाई चकित चित अधिक भई अकुलानि ॥
हाहा करत धरत करसौं कर परसत ही मति और।
नेति नेति वाणी निगमन की सफल भई तिहि ठौर ॥
इहि विधि रंग भरे मधु पीवत जीवत जीउ जिवाई।
कहि न सकत मनोहर लोइन अवलोकत ललचाई ॥

(विहागरो)

पौढ़े रङ्ग महल गोविंद। राधिका संग शरद यामिनी मुदित पुराण चंद ॥ नाना चित्र विचित्र चित्रित कोक कोटिक फन्द। निरखि निरखि विलास विलसत दंपती रस कंद ॥ मलय चन्दन अंग लेपन प्रेम सों आनन्द। कुसुम विजना व्यार ढोरैं सजनि परमानंद ॥८

कानरो

वल्लवी सु कनक वल्लरी तमाल स्याम संग लागि रही अङ्ग अङ्ग मनहु अभिरामिनी। वदन जोति जनु मयंक अलक तिलक छवि कलंक छपति स्याम अंक मानो जलद दामिनी ॥ विगत वास हेम खंभ मानो भुजग वेणि दंड प्रिय के कंठ प्रेम पुंज कुंज कामिनी। शोभित हरिवंश नाथ साथ सुरत अलसवंत उरोज

कनक कलस राधिका सुनामिनी ॥

इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे कृष्णाएकादशीक्षणदा ॥

बारहवीं क्षणदा

॥ कान्हरो चौताला ॥

ज्यौं तू दरपन में निरखि निरखि हंसत सो मैं जानी री माई।
तेरे रंगीले नैनन में प्राणप्यारे की मोहनी मूरति की झांई ॥
हौं तो रीझ रीझ रहिरी मोपैं कछु कहि न जाइ तेरी रूप की
लुनाई। नन्ददास प्रभु की प्यारी मोहित कछु हैरी कैसी मैं पाई ॥

॥ कान्हरो चौताला ॥

वेगि चलहु उठि गहरु करत कत निकुंज बुलावत लाल।
हा राधा राधिका पुकारत निरखि मदन गज टाल ॥
करत सहाइ शरद शशि मारुत फुटि मिली उर माल।
दुर्गम तकत समर अति कातर करहिं न प्रिय प्रतिपाल ॥
हित हरिवंश चलि अति आतुर श्रवण सुनत तिहि काल।
ले राखे गिरि कुच बीच सुन्दर सुरत सूर ब्रजलाल ॥२

(विहागरो)

हँसत खेलत बोलत मिलत देखो मैंरी आखिन सुख। बीरि
परस्पर खात खवावत ज्यौं घन दामिनी चमचमात शोभा तन
सुख ॥ श्रुतिधर राग केदारो जम्यो अर्धरात्र सुख। हरिदास के
स्वामी स्यामा कुंजविहारी सुरत देखत मैंरे भयो है परम सुख ॥

इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे कृष्णाद्वादशीक्षणदा ॥

तेरहवीं क्षणदा

तैं सिर घाली री ठगोरी प्रिय परि एरी प्यारी।
निशिदिन तोहे जपत प्राणपति ऐरी तेरी सौं लालन गिरवरधारी ॥
तेरे रंग रूप रसमानस राधे राधे रटत सदारी।

गोविंद प्रभु अब छांडि दियो सब कुंज विलास विहार विहारी ॥

(गौरी)

ललन शिर घाली री ठगोरी ।
जब लगि मुख देख्यों नहिं तब लगि भई रहत हैं बौरी ॥
वै मुख कमल पराग चाखि मैंरे नैंन मधुप लागी ठौरी ।
गोविंद प्रभु बनते जब ऐहैं रहत हृदय कैसे तोरी ॥२

ईमन

नैंना मैंरे मोपें न आवही । जब जब याई देखों हरि को वदन छवि तब तब न ऐसेंही ॥ रूप लालची ललचाई रहैं मानो ज्यौं विछुरे जलचर जल पावहीं । शोभा सरसी में जाई रस सौं भिलि मग्न भये अब सखी मौन वतरावही ॥ मुरारीदास प्रभु ऐते पर निठुर भये अपने ओट दुरावहीं ॥३

(बिहागरो)

वृन्दावन बैठे मग जोवत बनवारी । शीतल मंद सुगंध पवन बहे वंशीवट यमुनातट निपट निकट चारी ॥ कुंजन की लता ललित कुसुमन की शैय्या रचि बैठे नटनागर नव लालन गिरधारी । सूरदास मदनमोहन तेरो मग जोवत चलहु वेगि दरस दीजै तुही प्राणप्यारी ॥४

(विहागरो)

मधुर मधुर चलति आजु कीर्ति नन्दिनी । लोचन अलि ललित पलक मंद मंद हलत अलक सुन्दर मुखकांति कमल चंद निंदिनी । सौरभ भर भरित देश नव सत करि सुमन वेश रूप हेरि अमर नारि चरण वंदिनी ॥ दामिनी तन जलद वसन वरषत रस मुखर रसन वल्लभ मन नैंन कर्णं ताप कंदिनी ॥४

(कान्हरो)

नीके ह्वैने कुं निहारि धौंरी व्रजराज कुँवर की विराजनि माई ।

चंचल कुंडल चंचल लोचन चंचल पंकज माला सुहाई ॥
पीत झगा झलके री ता मध्य सांवरे गात की चंचलताई ।
नंददास मानो नवघन में सौदामिनी रहि लपटाई ॥२

विहागरो

प्यारी तेरी तन की सुन्दरता ।
नख शिख अङ्ग अङ्ग अवलोकि के चकित भयो करता ॥
अति अनूप कृश कटि अनूप सखि उर अनूप सुंदरता ।
छवि अनूप छन छन उपजत अनुपम उज्वलता ॥
उपमा करत विचार विविध सखी नाहिन देखत समता ।
कुंभनदास की स्वामिनी तोहि बस गोवर्धन धरता ॥

(विहागरो)

हँसि मिलिवो मेरे जियतें न टरई ।
सहज चितै चित चोर परस्पर प्रेम वचन लै सरस सुर ढरई ॥
मदन मुदित बंदही वंद छोरत उर जोरत मुख पर मुख धरई ।
परम स्नेह रसाल लाड़िली लालहि लपटि लटकि भुज भरई ॥
प्यारी जू प्राणनाथ सुख विलसत श्रमजल कण वरपत मन हरई ।
विहारिनीदास चंचल अंचल करि इह अवसर आनंद अनुसरई ॥

इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे त्रयोदशी कृष्णा क्षणदा ॥

चौदहवीं क्षणदा

कानरो

सखी री आजु गिरिधरलाल पगिया धरें पेंच बनाय ।
देखि शोभा कोटि मनमथ रहे शीश नवाय ॥
छांड़ि मानस मान नागरि निहारि पिय मुख जाई ।
चतुर्भुज प्रभु मदनमोहन लीजिये उर लाय ॥२

कानरो

खेल्यो लाल चाहत रमण ।

रचि रचि अपने हाथ सवारयो निकुंज भवन ॥१
रजनी सरस मद सौरभ सौं सीतल पवन ।
तो बिनु कुँवरि काम को वेदन मेटव कमन ॥२
चलहिं न चपल वाल मृगनैनी तजिव भवन ।
हित हरिवंश मिलिव प्यारे की आरति दमन ॥३

केदारो

आगे चल प्यारी जहाँ सघन नवल निकुंज भारी ॥
करसों अंचल करखि गहत जहां सुजान सुन्दर प्यारी ।
जहाँ निकट सरित समीर कोकिल मोर करत अखारी ॥
बांह जोटि रसमत्त मदगज चली तवहिं सुकुमारी ।
अंग अंग इनहिं छवि पर गोविंद वलि वलि हारी ॥२

विहागरो

विलसत राधा रमण रस सार ।
आजु भई इक नई रीत सुख सागर वारन पार ॥
प्रथम सवांरि सिंगार साथ नव सहचरि निरखि हुलास ।
वचन विलास प्रमोधा प्रिया मन धन लै चलि पिय पास ॥
अलक लड़ी लड़काई धरत पग जग मग लाड़ गहेली ।
प्रीतम मुख सुख देखि चली झुकि रुकि नहिं सकति सहेली ॥
चकित भये पिय सघन कंप हिय जिय में केतिक बातें ।
परतन आह ताहे सुधि भूली चपरि चले उठि तातें ॥
अति आतुर आगें प्रीतम लखि मुसकत ही गहि वहियां ।
मधु मादकज कला गीरति पति मन्त्र मुकट मणि नहियां ॥
प्रकट पंचशर एक ठौर करि कीनों शर सन्धान ।
भरे अंक परजंक चले पिय प्रेमानन्द निधान ॥
अरुण चरण करक्षेप निरन्तर गीम झुलनि वनीवाला ।
मिलि भूषण धुनि गद् गद् बोलनि सुनि सुनि स्वजन निहाला ॥

करत ख्याल बंधे प्रणय जाल जाके भाल भाग सोई निरखे ।
जैसें मनोहर तरल विजुल मिलि श्याम घटा रस बरखैं ॥८

कानरो

स्याम मखतूल को फोंदा । फव्यो है कुंवरजू के कंठ कछु श्रम स्वेद भेद तन मन में न समाति कांति बहु भांति लसत रस सौंदा ॥ अंग अंग आलिगन आभरण वारों कोटि मदन मद रौंदा । विहारिणी दासि स्वामिनी सेवत संतत सखी सुख पावत अनहौंदा ॥२

इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे कृष्णा चतुर्दशी क्षणदा ॥

पन्द्रहवीं क्षणदा

अडानो

पहले तो देखो आई मानिनी की शोभा लाल, पाछेंतें मनाइ लीजे प्यारे गोविंद । कर पर दे कपोल रही री नैंननि मूदि कमल विछाय मानो सो पोहै चंद ॥ रस भरी भौंहें भारी भ्रमर अरवरात इंदु तरे आयो मकरंद भरि अरविंद । नंददास प्रभु ऐसी काहे कों रूठै ए वलि जाके मुख देखत मिटत दुख द्वंद ॥२

केदारो

काहे कों मनायो स्यामलाल बाल जोरे नहिं डीठ । मन की जो लखिये मुख उन बोले ऐसी तुम्हारी रीठ ॥ मैं अपनी सी बहुत कही सुनि सुनि उन सबैं सही बारू की बूंद तहा कहा करे वसीठ । सूरदास मदनमोहन अपने जाइ मनाइ लीजे जैसी बहै बयार तैसी ओढ़िये जु पीठ ॥२

केदारो

आपने चलिये जु लालन कीजिये न लाज ।
मोसी जो तुम कोटि कपट वो प्यारी न माने आज ॥
मैं तो तुम्हारी आज्ञाकारिनी मो सों कहा कहो महाराज ।

नंददास प्रभु बड़े कहि गये आप काज महाकाज ॥२

विहागरो

लाडिली न मानै लाल आप पाँव धारो। जैसे हठ तजै प्यारी सोई जतन बिचारो ॥ बात तो बनाय कही जेती मत्ती मेरी। नैकहू न मानै लाल ऐसी प्रिया तेरी ॥ आपने चौंप के काज सखी भेप कीनौ। भूषण वसनं साजि वीणा कर लीनौ ॥ उततें आवत देखि चकित निहारी। कौन गांव वसति हो रूप उजि-यारी ॥ करसौं जु कर जोरि निकट बैठाई। सप्त सुरन तान मिलि सुलप बजाई ॥ रीझ मोती हार चारु उर पहिरावै। हमारौ सांवरो भट्ट ऐसौ ही बजावे ॥ मुख सों मुख जोरी स्याम दर्पन दिखावै। निरखि छबीली छवि गर्व विसरावै ॥ जोई कछु चाही वलि सोई मागि लीजे। इह दान सांवरे सौं मान न कीजे ॥ छद्म उघरि आये हँसि पीठ दीनी। धाय बलि राधिका रमन उर लीनी ॥६

विहागरो

दोऊ वीर सन्मुख सुरत संग्राम लरत। इतहिं नागरि कुँवरि उतहिं नागर कुँवर मल्ल प्रति मल्ल अंग संग तालिम करत ॥ अंग प्रति अंग सें निकसि भट साजि दल वलय कंकन घोख रोख निशान हत। खर नख वाण छूटत कवच कंचुकी सुदृढ़ लागत उरज सर नाहिं डर उरत ॥ कुंज शयनीय रथ रूढ़ सारथि सखि गूढ़ विगलित केश चवंर ध्वज फरहरत। दशन तोमरस काति सूर लागत दर अधर खंडित गण्ड पीक शोणित स्रवत ॥ बाहु युग बदननि बांधि नन्द नन्दननि राधिका पति आचारण विपरीत रति। रमत संग्राम भर श्रमित स्यामा जानि व्यास निज दासि कर कमल अंचल ढुरति ॥६

इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे कृष्णा पंचदशीक्षणदा ॥

प्रथम क्षणदा (शुक्ला)

राग-गौरी

जय जग शचीकुंवर विश्वंभर नागर वर । त्रिजगत पतित विलोकि कलागुरु करुणा रस सर्वस विग्रह धर ॥ निज वृंदावन लीला विलसत संकीर्तन गुन ग्राम बित्तत कर । तान वधान मान अभिनव युत नृत्यत्त भूषण भाव रतन धर ॥ चंचल चरन वरण गोरोचन लोचन वारिज वारि प्रणय ढर । धीरज विरहित रहित परापर उमगत्त उर अकुलात धरत गर ॥ मिलि सहचरगण रस आस्वादन प्रेम मगन कीने है थिरचर । या मधि हेतु न कहत अपराधी वंचित होत सुदीन मनोहर ॥४

(कल्याण)

मोहन मुखारविंद पर मनमथ कोटि वारों री माई ।
जिहिं जिहिं अंगनि दृष्टि परत है तिहिं तिहिं रहत लुभाई ॥
अलक तिलक कुंडल कपोल की छबि इक रसना मोपै वरनि नहिं जाइ । गोविंद प्रभु की चानिक पर वलि रसिक चूडामनि राई ॥२

ईमन

अब मेरे नैंननि वान परी ।
सब सुख सदन बदन देखे बिनु रहत न एक घरी ॥
जिनकै लियें लोक निंदा सब मैं ले दूर धरी ।
ज्यों ज्यों मात पिता मोहे त्रासत त्यों त्यों चांप खरी ॥
रही मौन धरि बोल न आवे आनंद उमगि भरी ।
सूरदास रस रंग भरे तें इक टक तें न टरी ॥३

ईमन

कहा करेगो कोऊ मेरो ।
हौं तो अपनें ते नहि टरिहौं जग उपहास करो बहुतेरो ॥
कोऊ आगें कोऊ पीछें कोऊ सुनाय सुनाय बडेरो ।

ऐसी कबहुँ मति बुधि नाहीं हरि संग छाड़ि करों पुनि फेरो ॥
अब तो जिय ऐसी बनि आई स्याम सिंधु में कियो बसेरो ।
जिहिं रंग सूर रंग्यो मन मेरो बहुरि न फिरै, तनक तन फेरो ॥४

(धनाश्री)

स्यामा तूं अति स्यामहिं भावे ।
बैठत उठत चलत गोचारत तेरी लीला गावे ॥
पीते पीतवसन भूषण सजि पीत धातु अंग लावे ।
चंद्राननि सुनि मौर चंद्रिका शीशहिं मुकुट बनावे ॥
अति आसक्त दरस संभ्रम मिलि अंग अंग सचु पावे ।
बिछुरत तोहि क्वासि राधे कहि कुंज कुंज प्रति धावे ॥
तेरोई चित्र करे अरु निरखे वासर विरह नसावे ।
सूरदास रस रासि रसिक सों अंतर क्यों करि आवे ॥५

(मारु)

घूंघट पट लटक अलक चटक मटक भ्रकुटि भंगी ।
नैन नचन चैन हरत मैन नटन रंगी ॥
राधा अभिसार रसिक सेखर रंगराती ।
निरखत सुख सदन बदन अंखियां अरु भ्रांती ॥
त्वरित चरित चकित चित्र मोद मत्त सोहै ।
करि सिंगार पुलकित तन परिजन मन मोहे ॥
मंद मंद चरण धरन चितवत चहुँ ओरी ।
चलत हलत चमक अंग उपमा कहि कोरी ॥
कर उतंग गुरु नितंब प्रणय भार भारी ।
श्रम जल कन निरवारत पवन मलय चारी ॥
द्विरद चाल लालन लखि बालन ढिग आये ।
हिय हुलास मुसकि मिलनि मनोहर मन भाये ॥६

—०—

विहागरो

कहा व्रत है हरि मन को हरण मृग नैनी मन हरि लीयो। अलक फंद मुखचंद सुधा पर सहज माधुरी मोहिनी नेकु चितै आधीन कियो ॥ नवल किसोरी दिनन की थोरी भोरी वत वनि भोर यो सब विधि रूप गुण तोही कों दीयो। जादो प्रभु मोहन की जीवनि नेकु न विसरत न्यारी होत छीन धरके हियो ॥२

विहागरो

विलसत प्यारी लाल कुंज रजनी। वदन बदन जोरि मदन लरावत नूपुर के सुर मिलि वलय की वजनी ॥ पुलकि पुलकि तन आनन्द मगन मन मधुरीम वचन श्रवन सुनि सजनी। विठल विपुल रस रसिक विहारी वश नव त्रिय तिलक सुरत जिति गजनी ॥२

इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला प्रथम क्षणदा ॥

द्वितीया क्षणदा

(कानरो)

जबतें देख्यौ मैं गौर किशोर।
तवतें भूलि अपन पौर हि जानत नहिं किहि ठौर ॥
जासों अधिकहु तो मन मेरो तासों भयो उदास।
लोइन स्रवत गात अति पुलकित लैलै जियो उदास ॥
बूझि न परत कहां होनों है निसि वासर नहिं चैन।
पूछौं तोहि मनोहर हुँ भइ कहा गहेली अैन ॥३

(नट)

रूप देखि नैंना पलक लगे नहीं।
गोवर्धन धर अङ्ग अङ्ग प्रति दृष्टि परत चित हरत तहीं ॥
कहारी करौं कछु कहत न आवै चित चोरयो मांगी पीवें दही।
कुंभनदास गिरिधरन मिलन की सुंदर बात सखियन सों कहीं ॥२

(नट)

नैंना मेरे घूँघट में न समात।
सुंदर वंदन नंद नंदन को निरखत मन न अघात।
अति रस लुवध महा मधु लंपट जानत न एको बात।
कहा भयो दरसन सुख मानें ओट भये अकुलात॥
वार वार बरजत हौं हारी तौऊ टेक न जात।
सूर रसिक गिरिधर विन देखें पलक कलप सम जात॥३

कल्याण

यातें हौं कहत करण केलि। सुनिरी सखी तेरे तन मण्डप बौंडी योवन वेलि॥ प्रीति कुसुम आनंद मकरंद ही रही आली अति झेलि। गदाधर प्रभु अंग संग सुफल फलित सखि सुमुखि सहेली॥

कल्याण

चलि सुंदरि बोली बृंदावन। कामिनि कंठ लागी किनि राजहि तू दामिनि मोहन नूतन घन॥ कंचुकी सुरंग विविध रंगसारी नखयुग ऊन बने तेरे तन। ये सव उचित नवल मोहन कों श्री-फल कुच जोवन आगम धन॥ अतिशय प्रीति देती अंतरगति हित हरिवंश चली मुकुलित मन। निविड़ निकुंज मिले रस सागर जीते सान रतिराज सुरतरण॥२

—०—

प्यारी तेरे लोयन अति ही लोने।
रस के आल वाल रंगीले विसाल ऐसे भये न हौने॥
अति ही रिझौने जब मुखकि चलति कोने को हेरि टक ठौंने।
नंददास नंदनंदन के नैंनते नाहिन नेंकहु ऊने॥६

———

विपिन घन कुंज रति केलि भुज मेलि रुचि श्याम स्यामा मिले शरद की जामिनी। हृदय अति फूल समतूल पियनागरी, करिणी

कर मत्त मन विविध गुण रागिनी ॥ करत रसहास परिहास आवेस वस दलित दल मदन वल कोक रस कामिनी। सुहित हरिवंश सुनि सुनि लाल लावन भिदे प्रिया अति सूर सुख सुरति संग्रामिनी ॥७

इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला द्वितीया क्षणदा ॥

तृतीया क्षणदा

कानरो

व्रज की खोरि सांकरी। जित तित होत अचानक भेट हुँ सकुचा उलट्यो चाहत री ॥ जित तित हौं मग रोकत टोकत डगर तजति पग गड़त कांकरी। ज्यों ज्यों हौं सब अंग दुरावति, त्यों त्यों चिवुक गहि आयो धांकरी ॥ सूरदास मदनमोहन जेतो कीयो बोलन को तौऊ में न हांकरी ॥२

कानरो

आजु मिले:पिय सांकरी गली। मदनमोहन पिय डारी मो तन चंपकली ॥ वारिज वदन देखि विथकित भई, घूँघट में न समात नैंन अली। गोविंद प्रभु पिय प्यारी परस्पर रहे अनुराग दली ॥२

कानरो

चलि सखि बहुरि गोपाल मिलावों।
तू मन मांहि वहुत पछतावति सो फल पुनहि फलावो ॥
करहु सिंगार गहरु अब छांड़हु नातर मदन बुलावों।
वल्लभ रूप मोहिनी पढ़िकें धैरज लाज गलावों ॥२

कानरो

देखि सखि राधा अभिसार।
अति अनुराग भरे उर अंतर वाहिर रतनन भूषण भार ॥
सहचरि साथ बात कछु न करत डरत लोक लाज विस्तार।
वल्लभ मिलन मनोरथ वहुविधि मनहिं विचारत वार न पार ॥२

कान्हरो इकताल

गहवर गिरि साँकरी गली। रही न सँभार देह सुधि बिसरी मिलि औंचक वृषभानु लली ॥ दक्षिण कर गैंदुक सुमनन की वाम अंश भुज सुहृद अली। अंचल डारि आधे सिर छबि सौं मत्त द्विरदगति आवत चली ॥ गुण प्रयोग सहचरी संभरावति हृदय रूप मूरछा जु सली। नागरीदास मिटाय ललक रति मिलत उरज उर गांत बदली ॥६

विहागरो चौताल

हौं वलि जाऊँ नागरी श्याम।
ऐसे ही रंग करौ निसि वासर वृंदाविपिन कुटी अभिराम ॥
हास विलास सुरति रस सींचत पशुपति दग्ध जिवावत काम।
हित हरिवंश लोल लोचन अलि कहहुँन सफल सकल सुखधाम ॥

इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला तृतीया क्षणदा ॥

चतुर्थी क्षणदा

राग कानरो इकताला

जै जै नदिया नगर विहारी।
सुंदर श्याम वाँम सुख अनुभव हेतु ज्यौ गौरवपु धारी ॥
कृष्ण नाम वर रहत मंद स्वर गद्गद् रोकत वानी।
लोचन अरुण प्रवाह रोकि मानों छाड्यौ है पानी ॥
पुलकित कंपित तामधि हुंकृत तुंगित भाव अनंत।
विरह जलधि जल मानौ अपने बल कूदि परे गुणवंत ॥
कबहुँ न सुन्यो नैंन नहिं देख्यौ ऐसो भाव विलास।
समझ न सकत तौऊ फिरि वरनत निलज मनोहरदास ॥१

———

हेलि कौन एक सुन्दर सांवरौ इत ह्वै आवै जाय।
ज्यों ज्यों आखिन देखि ये त्यों त्यों जिय ललचाय ॥

वदन मदन मन मोहनारी हेली घूंघर वारे केस ।
मोहन मूरति माधुरी नित मनोहारी वेस ॥
मदन चरुणि हियो वेधि योरि हेलि योवन मद छके नैंन ।
रूप ठगोरी मोहि लागी विनु देखें नहिं चैन ॥
धीरज हरण बड़ेडी भुजा हेली मद गजराज की चाल ।
उर देखें ज्यों आवही ह्वै रहीय वनमाल ॥
विसराये विसरे नहीं मन हरि मन रह्यो भोय ।
रामराय पिय सों रमें भगवान सखी सोय ॥

नवल लाल के शीश पर चंद्रिकारी ब्रजजन मोहे ।
पीतांवर अति रंग भरयो है जगमगाति छवि सोहे ॥
निरखत ही चकचौंधी लागत मनमथ कौ मन मोहे ।
हरिनारायण स्यामदास के प्रभु छवि निरखत जो न डिगे सो कोहै॥

(केदारो)

राधे देख नव निकुंज नायक रसिक गिरवर धरण ।
सकल अंग सुकुमार सुंदर सुभग साँवर वरण ॥
सहज नटवर वेस दरसन नैन सीतल करन ।
कर सरोज उरोज परसत युवति जन मन हरण ॥
वेगि चलि मिलि गुन निधानहि साज पट आभरण ।
चतुर्भुज प्रभु नवरंग नायक सुरति सागर तरण ॥

(विहागरो) रूप कल्यान

सोभित हाथन चारि चारि चूरियाँ । जांवुनद जवा निके तापिते रवानिके आन भाँति फंदवनि बहु छवि जुरियाँ ॥ दशन वसन ज्योति लसत नासिका मोति नयन बने मानो कमल पखुरिया । चम्पक वरन तन पहिरे कुसुंभि सारी पिय पै गमन कीनौ नवल बहुरियाँ ॥ कुच जो कठिन वाल विलुलित उर माल तापर अलकावलि यों विथुरियाँ । मानहुँ कंचन घट जानि आये तट सुभग

भुजंगिनी चली उत मुरियाँ ॥ वय संधि जुटि मुठि मापन कटी त्रिवली देख मानौ विध की अंगुरिया। नूपुर रुनझुन कूजित कलरव राजहंस गति चलत मधुरिया ॥ पद जो पल्लव वर मानो री दुगुन सर मन मथ तरकस युगल पिंडुरिया । श्री गोपाल प्राण प्यारी विद्या राधे सुकुमारी रूप जोति जगमग सखी चहुँ ओरियाँ ॥

(कानरो)

झीनों झगा सोंधे भीने छूटे बंद लपटि रह्यो स्याम अंगनि सों। कटि धोती सोहती छवि सों ठाड़ेरी ललित त्रिभंगिनि सौं ॥ लाल पीत पाग पर पुहप गुच्छ ढिग मोर पुच्छ वनि अति रंगिनि सों ॥ कर मुरली उर माल मालती सोहे गोवर्धनेश चपल दृगन भुवंगिनि सों ॥२

(विहागरो)

उर मुख पियरी पर आई प्रस्वेद कन ऐसी नीकी लागें हीराकन कुंदन मध्य खची। आधि पल आधी अखियन चितवत अर्ध-खिली कमल कली भँवर भार लची ॥ धर धरात छतिया उसास उसासनि मानो चक्रवाक पोत जोति तरंगनि उगची। जगन्नाथ कविराय के प्रभु जब अंक भरि लीनि प्यारी चपल भई मानों घन में दामिनि कांति पांति नची ॥७

(विहागरो) एकताल

आज वन क्रीडत मदन गोपाल ।
मुख सों मुख उरसों उर जोरत चपल होत व्रजवाल ॥
अधर कपोल नैंन युग चुंवन मनमथ नटन विशाल ।
मानहु प्रिया नव कनक जुही मिलि वल्लभ लसत तमाल ॥

इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला चतुर्थी क्षणदा

———

पंचमी चखदा

(नट राग) चौताला

काकौ काकौ मुख माई वातन कौं गहिये । एक की पाँच लगावे दूत होइ झुठि सुनावे तनक जो साँची होइ तो सब सहिये ॥१
घर घर एही चवावो ब्रज में मोही सों वैर सुनि सुनि श्रवननि दुख दहिये । प्रभु मेरे सूरदास सिर परौ सब उपहास मदन मोहन मिलै तो सच लहिये ॥२

वात हिलग की कासों कहिये । सुनिरी सखी व्यथा एह मन की समझि समझि हिये चुप कर रहिये ॥ मरमी विना मरम को जाने इह विचार अपने जिय सहिये । कुंभनदास गिरिधरण मिले जब तबही सब सचु लहिये ॥१

अंग अंग की वानिक मोपे कहि न परें काम को मद हरे भ्रकुटि भंग । त्रिभुवन सोभा वारि डारौं एक रोम पर उपमा सब डोलत लागी संग ॥ जिहि अंग दृष्टि जाय रही जु तिहि लुभाय नैंन मैंन गति भूली भई जु अपंग । सूरदास मदनमोहन पिय सोभा सिंधु पावें न पार छवि के तरंग ॥२

(कल्याण)

रखे मेरे रहत नहीं अधिक चपल ये नैंन ।
धावत तकत स्याम मुख अंवुज मानौ मधुप मधु चाहत लैन ॥
भौं कुंचित धरै लाल चहुँदिशि फिरें नाचत अनेक नचावत मैंन ।
चतुर्भुज प्रभु गिरिधर बस कीने सखि गूढ़ भाव की सैंन ॥२

कान्हरो इकताल

गोरी राधा प्यारी पहिरे स्वेत साड़ी जुन्हइया तोहे अति होड परी । कंचन गात आभूषण पहिरें मुक्ता किरण मिलि छवि

पसरी ॥ जगमगात चकचौंधी सी लागत एक रसना मोपै कहि आवत नरी । जगन्नाथ कविराय के प्रभु फूलन की शैया रची चलिये मिलिये करिये रस रंग रली ॥ २

(राग विहागरो)

नव निकुंज नव भूमि रगमगी । नव भूषण नव रंग विराजत नवल बदन पर अलक सगवगी ॥ नव सत सजि सिंगार सुभग तन नवल शरद की जोन्ह जगमगी । घोंठल विपुल विहारी के लाडिली खेलह सहज उर लगी ॥ १

आज रस सागर दोऊ विराजत । मिलतहिं नैंन बदन विधु भामिनि कर अंतरनि दुरावत ॥ लाल चकोर हा हा अति आकुल तनक नतौदर सोवति ॥ सहचरि पाँय परत तव बल्लभ जिय रसिकननि जियावति ॥ २

(विहागरो)

रंग भरे लाल रंगीली प्यारी राधा ।
एक तन एक मन एकहि समान दौऊ नैकहुँ न न्यारे होय सकत पल आधा ॥ छवि सों छवीली भाँति नैंनन में मुसकाति मुस-कनि में रंग बढ्यौ है अगाधा । तैसी है नवल सखी तैसो है कुंज बिहारी जीयौ मेरो प्राण प्यारी पूजो मन साधा ॥ २

॥ इति गीतचिंतामणौ शुक्ला पंचमी क्षणदा ॥

षष्टी क्षणदा

(राग विहागरो)

इह ढोटा हठि हरत परायो मन । देखत रूप ठगौरी सी लागी जगत विमोहत श्याम बरण ॥ तन दिन दिन चौंप चौगुनी बाढ़ी पावस रितु मानो नूतन घन । दामिनी कोटि पीतांबर छवि पर परमानंद राजत वृंदावन ॥२

कमल मुख देखत कौन अघाय । सुनिरी सखी लोचन अलि मेरे

मुदित रहे अरुझाय ॥ शोभित मुकुता दाम श्याम उर मानहुँ बन फूलि जाइ। गोवर्द्धन धर अंग अंग पर कृष्णदास बलि जाई ॥ २

(विहागरो)

सखि देख चंदवा मोर के।
आजु बने शिर शांवरे पिय के पीत छबीले छोर के ॥
पुनि लखि ललित सलोने होने लोइन नंदकिशोर के।
बाँकी चितवन चलति तिरीछे छेदक उरके ओर के ॥
बार बार भ्रुव कुटिल होत जब गावत राग मरोर के।
मानो पंख संवारत बैठे पंकज पर अलि भोर के ॥
मुख पर कछुक अमी निधि साई मोहन चित के चोर के :
नंददास मेरे नैन भये तहाँ वारिधि मीनहि लोर के ॥ ४

—❀०❀—

तूँ धनि काम की बेलि,
अंकुर कटाक्ष पल्लव पहुप तेरे हँसनि।
श्याम तमाल लाल सों तन में लिपटि गसी प्रेम गसनि ॥
चंचल दृष्टि झकोरनि मोरनि अंग अंग लसनि।
इह छबि निरखि बनवारी के प्रभु गुण की तो में वसनि ॥

(कल्याण)

राधिका रमण पैं गमन प्यारी।
सरस सिंगार सितहार चोली चमकि चरचि चंदन पहिरि स्वेत सारी ।। चंद्र किरणावली अमल अतिशय खिली तरुणि तामें मिली चरण धारी। चलति गति चपल मति चकित चाहति चतुर चौगुणी चौंप डग भरति भारी ॥ करत अगणित मनोरथ मिलन ललन सों हृदे प्रिय प्रेम मद मुदितकारी ॥ प्रणय नय सुघर सखि अंस भुज गहि झुकति रसिक सिर रतन गुण

कथनहारी ॥ ३ ॥ युगल सौरभ खरी मनहु निज सहचरी उभयं आगे करी सुधि बिसारी। अतुल ललचाइ लोचन दरस पर सपर मनहि मन हरण तन अपन वारी ॥ ४

(विहागरो)

मंजुल कल कुंज देस राधा हरि विशद वेस, राका नभ कुमुद बन्धु शरद जामिनी ॥ शाँवल द्युति कनक अंग विहरत मिलि एक संग नीरद मणि नील मध्य लसत दामिनी ॥१॥ अरुण पीत नव दुकूल अनुपम अनुराग मूल सौरभ युत शीत अनिल मंद गामिनी। किशलय दल रचित सैन बोलत प्रिय चाटु वचन मान सहित प्रतिपद प्रतिकूल कामिनी ॥ २ ॥ मोहन मन मथ सभार परसत कुच नीवि हार वेपथु युत नेति नेति वदति भामिनी ॥ नर वाहन प्रभु सुकेलि बहु विधि भर भरित भेलि सौरत रस रूप नदी जगत पाविनी ॥ ३ ॥

(विहागरो)

पोढे राधिका उर लाय। नव सद नव निकुंज शैय्या नव चतुर दोऊ राय। गान करति ब्रजनारि द्वारें सरस राग जमाय ॥ वन वारि गिरिधरन को सुख रह्यो मन लपटाय ॥ २

(विहागरो)

फूलन के महल फूलन की शैय्या फूलन की चौखडी फूलन की तिवारी। फूले से बदन देखि फूले हैं कमल नैन फूली बात कहत पिय प्यारी ॥ फूलन के सुख केलि फूलन के हार हमेलि फूल सी छिरकी रही निशि उजियारी। फूली हैं सखीजन प्रेमे फूल्यौ तन मन रामराय फूले हैं निरखि गिरिधारी ॥ २

॥ इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला षष्ठी क्षणदा ॥

———

सप्तमी च्रणदा
कल्याण

मोहन वदन की शोभा।
जाहि निरखत उठत मन आनंद कि गोभा॥
भौंह सोहन कहा कहौं छवि भाल कुम कुम बिंदु।
स्याम बादर रेख पर मानौ अब ही उग्या इंदु॥१
ललित लोल कपोल कुण्डल मधुर मकराकार।
जुगल ससि सौदामिनी मानों नचत नट चट सार॥२
वंसिका कलहंसिका मुख कमल रस राची।
पवन परसत अलक अलिकुल कलह सी मांची॥३
नैंन धीर अधीर कछु कछु असित सित राते।
प्रिया आनन चंद्रिका मधु पान रस माते॥४
विमल सजल सुढार मुक्ता नासिका दीयो।
उच्च आसन पर असुर गुरु उदो सौ कीयो॥५
लाग्यो मन ललचाय तासों टरत नाहि टारचौ।
अमित अद्भुत माधुरी पर गदाधर वारचौ॥६

विहागरो

अरी मन गह्यो स्याम सलोने रूप में अंग अंग रंगनि भरचो। ऐसो लटू ह्वै लटक्यो तामें फेर न मटक्यो अनेक जतन मैं करचौ॥१॥ ज्यौं ज्यौं ऐंच्यो त्यों त्यों अधिक मगन भई नाहि न जात कह्यो। नंददास तामें तु सीख देरी आली कैसे कै निकसत कुंजर चहल परचौ॥३

विहागरो

तेरे ही रंग रंग्यो महमोहन और कछु न सुहाय।
चित वित चोरि लियोरी लालन को रूप निरखि अघाय॥
चंद चकोर थकित ज्यों नागर रूप सिंधु मन जाय।
नैंन सों नैन मिलेरी प्राण सों प्राण रहे अरुझाय॥

अति रस मत्त माधुरी भीने उमगि उमगि गुण गाय ।
श्री दामोदर हित अद्भुत विलसो सदा रहो चित लाय ॥३

(कल्याण)

राधिका अभिसरति विपिन कुंजे । वहु कुसुम वेश वनि कुटिल घन केश गनि लसत सीमंत अति किरण पुंजे ॥ सतत गुरुलोक डर चकित आकों भरत पथ विपथ देखत न सखिन सगे । मदन मद नृत्य रस मगन चितवित वश रभस हरिवल्लभ प्रणय रगे ॥२

(विहागरो)

स्यामा प्यारी आगे चलि आगे गहवर वन भीतर जहां बोले कोयल री । अतिहि विचित्र पुष्प पत्रन की सेज्या रची रुचिर संवारी तहां तुम सोय लरी ॥ घरी घरी पल पल तेही कहानी तू वा मग जाय लरी । हरिदास के स्वामी स्यामा कुंजविहारी काम रस भोइलरी ॥

(विहागरो)

कुसुमसर आज नवराज पाये। सुनत नूपुर सुर सु रसिकभणि भयो विवस निकसि नव कुंज तें निकट आये ॥ नैंन नैंनहि मिलत झुकि रमणि कछु फिरत वाम कर अंचलनि मुख दुराये। खोलि घूँघट बलनि बदन विधु झलमलनि मगन हरिवल्लभ प्रमद पाये ॥७

(बिहागरो)

नव किसोरी अंग संग नव किसोर राजें । अरस परस करत केलि रति रस तन मनहिं झेलि वलय नूपुर किंकिणी सुर मधुर मधुर वाजे ॥ वचन रचन करत ख्याल टूटत मणि पुहप माल जगमगात गौर स्याम दामिनी घन लाजे । विविमुख शशि विशद हास प्रेम मगन गिरत वास जगन्नाथ किये सनाथ निरखत दुख भाजे ॥

इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला सप्तमी क्षणदा ॥

अष्टमी झगड़ा

(भीमपलाशी)

हांतौ भई बाडरी मनमोहन वेगि मिलावरी भूल्यो सब सुख चावोरी वन बाजे वंशी बोलत मदनगोपाल । सजनी देखे कुंज-विहारी कों नवनागरवर गिरिधारी को सुखसागर पिय वनवारी संग खेलें आली ह्वै विहरें वनमाल ॥ मोहन मूरति मोहिनी अलकें घूँघरवारी सोहनी वै अखिया ललित लगोहनी रस प्रेम चखीली मदमाती छवि लाल ॥ नासा मोती झलक सोहावनी रुचि वेंदी भाल रिझावनी पिय बोलनी समुझयो गावनी सुनिकें सच पावें तिनमें अर्थ रसाल । आई सब ब्रज भामिनी धाई घन ज्यों दामिनी विवि मलि मिली गज गामिनी वंशीवट नियरे निरखैं नैंन विसाल ॥ हिलिमिलि अंसनि भुज दीने हस्तक भेद अरप कीने समताल परण पर मनदीने श्री राधामोहन नृत्यत मधुरी चाल ॥३॥ द्रुमवेली दरसें सरसें देववधू सुख कों तरसें सब ब्रह्मादिक फूलनि बरसें गुण भेदन गावें रस बाढ्यो तिहि काल । चकचौंधी दृग लागहीं वै मुरछि मनमथ जागही लखि सदानंद रस पागही थिर चर गति पलटी नाहि न होत संभाल ॥४

कानड़ी

हरि रास करें हरि रास करें । श्रीराधा संग हां नृत्यति तांडव गति अव धरयत नूपुर स्वर उचरें ॥ झं झं झं झं झं ण झं झंण झंण झंण झंण झंण झंण श्रवण चित्त हरें ॥ तन तन नन नन वाजत वेणु धुनि मुरली अधर धरें । धीं धींना धीं धींना धींना धृ मकट धृम कट धी धी धीना मंडल परण परें ॥२॥ लटकि चलति सन्मुख होय आवत दीये भुजा गरें । सदानंद प्रभु की छवि निरखत मनमथ मान हरें ॥२

—o—

विहागरो

रच्यो रास मंडल कुंवर किसोरी देखति मो मति भोरी।
आपने नाचत नचावत स्यामैं ऐसी राधा गोरी ॥१
मुकट कि लटकन पगकि चटकनि बिच मुरली धुनि वाजत थोरी।
अंक भरे मनहरत परस्पर मृदु मुसकानि मुख मोरीं ॥
आप आप में हरषि परस्पर करत चितै चितै दोउ जोरी।
इह छवि निरखत सील चंद्र वलि रीझि रीझि तृण तोरी ॥३

विहागरो

कुंज महल के आंगन डोलें वाँहा जोटी।
कबहुँक चंद कबहुँ प्यारी तन निरखि रहत पुन डग भरें छोटी॥
कबहुँक कुसुम वीनत कलि मोटी मोटी।
हरिदास के स्वामी स्यामा कुंजविहारी गुहि गुहि बांधे चोटी ॥२

विहागरो

हँसत खेलत सुख पावत भावत मेरे मनमोहन जोरी। यही रहौं आंखिन आगेरी सजनी पलक ओट जिन होउ कबहुँ छिन छिन नवल किसोर किसोरी ॥ नव मरकत द्युति श्याम सलोनों कंचन कांति राधिका प्यारी। परमानंद उमगि दोउ प्रीतम केलि करहु चितव मेरी ओरी ॥२॥

अध लगी पलकें छवीली छूटी अलकें श्रम विंदु झलकें कपोल उर भालकें। मुख में उसास भरैं कुच दोउ थर हरें पिय के हिय में परें मोती कंठ मालकें ॥ कहत कवि मण्डन रसन रुनझुन झुकत लचकत लांक कच विथुरत बालकें। इत उत मांग फूल फैलत विछोनन पर तरल तरौना ये खिलौना काम लालकें ॥२

इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला अष्टमी क्षणदा॥

नवमी क्षणदा

राधिका रमण की मुरलिका श्रवण सुनि भवन सब काज तजि

गमन कियो भामिनी। नाद रस विवश भई आन गति छूटि गई विपिन आतुर चली रूप अभिरामिनी॥ निकट पिय के गई रसिक कर गहि लई स्याम घन गिरिधरण युवति सौदामिनी। करत यामिनी केलि कंठ भुज हठ मेलि चतुर संग चतुरभुजदास की स्वामिनी ॥२

—०—

कुंज महल में हैं ललना रस भरे बैठे संग पियारी। रुचिर चारु कमनीय वदन परि मृगमद तिलक संवारी॥ घनचय चिकुर विथुरि नाना रंग गूथत चंपक वकुल गुलाब नियारी। गोविंद प्रभु रस वस कीने वृषभानु दुलारी प्यारे मदनमोहन गिरिधारी॥

इकताला

चलो किनि देखैंरी देखें खरे दोउ कुंज की परछाहीं। एक भुजा गहि डारि समैं कुंज की एक भुजा गलवांही॥ छवि सो छवीली रहि लपटि लटकि मानो कनक वेलि चल तरु तमाल अरु झाहीं। श्री दामोदर हित प्रिया सों करत बात अद्भुत विलसौ रंगे प्रेम रंग माही ॥२

केदारो

शरद उजियारी नीकी लागें। निकसि कुंजतें ठाढ़े वरण वरण कुसुमन के आभूषण और सोंधे भीने वागे॥ अति अनुराग भरे पिय प्यारी गावत केदारों रागे। हित भगवान आजु तृण टूटत कछु रजनी दोउ जागे ।२

केदारो

रास में रस भरी राधिका आवैं। वाहु पिय अंस धरि हंसगति कनक कुच घटवती रसिक कर भावैं॥ तिरप तांडव लास्य उरप सुलपनि भेद नृत्यती प्रिय संग मधुर कल गावैं। लोल कटि देश मुखरित रतन मेखला नुपुरा कुणित वर हस्तक दिखावै॥ चपल

जुग भौंह नैन मृदु मृदुल मुसकाबनी गुण रासि प्राणपति मोद उपजावे। वृषभानुनंदिनी गिरिधरण नंदसुत चरण युग रेणु कृष्णदास तहां पावे ॥३

विहागरो

नृत्यत रास रसिक नवरंगी।
अधर सुधारस मधुर मनोहर मुरली तान तरंगी ॥
नव नव अंग अंग नव नव रस नटवर ललित त्रिभंगी।
मुरारि प्राणपति रतिरस लंपट रसवस राधा संगी ॥२

विहागरो

देखो माई नाचत नटवर नागर।
वीन लिये कर ललिता गावति श्याम मुरलि रस आगर ॥
अंग अंग त्रिभंगिम रंगीम नटन अनी को सागर।
मुरारी प्राणपति यौवन रतननि गहक रसिक सदां हक ॥२

विहागरो

सोहन मोहिनी के संग।
संगीत निपुन रास रस लंपट नृत्यत मधुर सुधंग ॥
चितवत सुन्दर वदन परस्पर उमग्यो प्रेम तरंग।
मुरारि प्राणपति द्वे द्वे निरखत वाढ्यो नव रस रंग ॥२

विरागरो

आजु देखो वृन्दावन के भूप।
प्रिया अंस भुज राजत कोटिक मदन मनोहर रूप ॥
प्रविशत निभृत निकुंज सखीगण विरचित सुमन सुवेश।
पनस रसाल करक रंभादिक रस मधुपान विशेष ॥१
परिजन करत वींजन पद सेवन रति सुख शयन निकेत।
खपुर कपूर सुरभि वीरी दोउ मुख पंकज में देत ॥
बिनुँ अपराध दौऊ पर जब सर हानत मनमथ राजे।

ता कारण दोउ विवश अंग अवलोकि सखी सब भाजे ॥
जानी फौज चढ़ी मनमथ की किंकणी वाद्य विलासे ।
लूटत वसन भूषण मुक्तावलि बाँधि दोउ भुज पाशे ॥
उरनखघात अधर दंशित दोउ वदन उसास भरे ।
हरिवल्लभ आली दुरि हेरत लता जाल विवरे ॥७

इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला नवमी च्रणदा ॥

दशमी च्रणदा

(कल्याण)

रास मंडल बने नृत्य नीकी बनी । गौर गोविंद के नैन अरविंद सों छूटत आनंद मकरंद चहुँदिशि घनी ॥ ताल वश मृदु चरण धरण धरिणी हुलसि विलसि हस्तक भेद चलनि लोइन अनी । पुलक आपाद घन कंप भर थर हरण परत प्रस्वेद सुरभेद भारी बनी ।। असित सित आरकत धरत जड़ता जबहिं तबहिं ठाड़े रहत गहत वानिक फनी । निपट अवसन्न जब तबहि खिति धुकि परत अंगनहिं हलत गति स्वासकी निगमनी ॥ ता समै जगत में जीव जेतिक वसत प्रेम आनंद के होत सगरे धनी । चकित सब पारिषद सबद मुखमे मिल्यो लगी टकटकी एह सुख मनोहर भनी ॥

(कल्याण)

मोहन मुख वेणु बाजे मंद मंदकल ।
वाम कुंडल वाम भुज धरें नृत्यत भ्रुव अति चपल ॥
मोहित विमान बनिता खसत नीवि सुध्यो नहिं अंचल ।
गोविंद प्रभु के तरुण मदमाते विघूर्णित लोचन युगल ॥२

(केदारो)

सुनि धुनि मुरली वन बाजे हरि रास रच्यो । कुंज कुंज द्रुम

वेलि प्रफुल्लित मंडल कंचन मणिन खच्यो । नृत्यत युगल किसोर युवति जन मन मिलि राम केदार मच्यो । हरिदास के स्वामी श्यामा कुंजबिहारी नीके आजु गोपाल नच्यो ॥

(बिहागरो)

लाल लट कंता जौवन मद मंत्ता खेलत रास अनंता । यमुना तीर भीर युवतिन के बाहु जोरि मंडली बनाय मध्य राधिका कंता ॥ एकनिके जुग कुचकपोल परसत परिरंभन देतहू संता । किसोरदास के प्रभु कुंजबिहारी विहारिणि के संग इहि विधि केलि करंता ॥१

(कल्याण)

आजु मोहन रची रास रस मंडली । उदित पूरण निशानाथ निर्मल दिशा देखि दिनकरसुता सुभग पुलिन स्थली ॥ बीच हरि बीच हरिणाक्षि माला बनी तरल तापिंछ मनौ कनक कदली रली । पवनवश चपल दल डुलनिसी देखियत चारु हस्तक भेद भाँति भारी भली ॥ चरण विन्यास कर्पूर कुंकुम धूरि पूरि रहि दिशि विदिशि कुंज वन की गली । कुंद मंदार अरविंद मकरंद मद पुंज पुंजनि मिले मंजु गुंजत अली ॥ गान रस तान के वान वेध्यो विश्वजान अभिमान मुनि ध्यान रति दल मली । अधर गिरिधरण के लागी अनुराग सों जगत विजयी भई मुरली काकली । रस भरे मध्य मण्डल विराजत खरे नंदनंदन कुंवरि वृषभानु की लली ॥ देखि अनिमेख लोचन गदाधर युगल लेखि जिय आपनि भाग महिमा फली ॥

—०—

रास में जराय जटित मर्कतमणि हेम खचित नील पीत हरित रंग मंडल की शोभा । अति अद्भुत झलकत छवि रहे अभूत शोभा फवि बीच बीच सुरत रंग उपजत अति गोभा ॥ एक रूप एक वैष एक ही समान सबै एकतें विचित्र एक चितवत चित

चोभा। नवल सखी अति उदार देखत छवि बार बार वारि फेरि डारत मन मनसिज मन लोभा ॥२

(विहागरो)

व्रज जुवति मंडली राजत राधिका रस रंग भरी रूप शील गुण समुद्र लाल भावनी। प्यारेलाल देत ताल चुटुकि चुटुकि छवि विसाल थै थै थै शब्द उघटि पिय नचावनी ॥१॥ गूथत सखी सुमन केश माग शीपसुत सुदेश झलक तिलक चपल नैंन सुख बढ़ावनी। राजत राकेश बदन दाड़िम सम चमक रदन शोभा सुख सदन मदनमद नसावनी ॥२॥ अरुण वरुण कंचुकी चल नील अंचल फरहरात चंचल उर हार चारु छवि सुहावनी। थै थें थै कर उच्चार तिरपबंध टूटे हार चरण कमल नूपुरि छवि सों बजावनी ॥३॥ टूटि सुरनि झीन रंग रीझ रीझ भरत अंक अंग अंग पर श्याम हिय रावनी। सीदामोदर हित वित विलास इह विधि प्यारी खेलि रास बैठि कुंज कुसुम सेज पिय रमावनी ॥४

(शंकराभरण)

कुंज भवन मोहन करत हैं काम केलि। बैठे पुहप तलप ऊपर प्यारी के कंठ भुजा मेलि ॥१॥ हाव भाव मृदु हास विलास ललिता पीयत सखी नैंन पुट निरेलि। मथुरा हित मोहन ढिग राधा सुरति समय रस झेलि ॥२

इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला दशमी क्षणदा ॥

ग्यारहवीं क्षणदा

(कल्याण)

गौर गोविंद व्रजचंद आनंद निधि कीर्तनहिं बनि नचत रसिक जन संगिया। प्रिय गदाधर लिये प्रेम पुलकित हिये सघन हरि हरि बोलि थकित गति भंगिया ॥१॥ प्रकट कंचन वरण अंतर

नवीन घन राधिका भाव भर मत्त रस रंगिया । गावत मधुर बैन श्रवत अरुणित नैंन दुःखित जन निरखि प्रभु करत उछंगिया ॥२॥ मृदंग करताल वर मिलित सुर परस्पर श्रवन आनंद करत बजत उतंगिया । पतितजन पावन हे निज चरण राखि लै तुम जगन्नाथ गति करुण रस अंगिया ॥३

(केदारा)

इहै छवि तोही पै बनि आवे ।
बिन कंचुकी सहज सुभगता रसिक गोपालहि भावे ॥
एक ओढ़नी ओढ़ि हंसगति मनमथ मोद बढ़ावे ।
बदन सुधानिधि नव निकुंज को गहवर तिमिर नसावे ॥२
तब गुणगण गिरिधरण लाड़िलो श्रीमुख मधुरे गावे ।
श्री वल्लभ पदरज प्रतापतें कृष्णदास बलि जावे ॥३

(केदारो)

रंग रगीलो री नदनंदन आछी वाँसुरी बजावे । भूली मृगी सी गोपी ढिग ठाढ़ी मधुर मधुर स्वर गावे रिझावेरी तानहीं तानन अद्भुत गति उपजावे ॥१॥ सिला सलिल कीने सलिल सिला कीने खग मृग नगन की कौन चलावे । नंददास प्रभु के नाद विवस भये वश कीन्हे वृंदावन कछुव सुधि न रहन पावे ॥२

(कल्याण)

रास में रसिक मोहन बने भामिनी । सुभग पावन पुलिन सरस सौरभ नलिन मत्त मधुकर निकर शरद की जामिनी ॥ त्रिविध रोचक पवन ताप दिनमनि दवन तहां ठाड़े रवन संग शत कामिनी । ताल वीणा मृदंग सरस नाचत सुधंग एकतें एक संगीत की स्वामिनी ॥२॥ राग रागिनी जमी विपिन बरसत अमी अधर बिंब निरमी मुरली अभिरामिणी । लागत उरप सप्त सुरसों सुलप लेति सुंदर सुघर राधिका नामिनी ॥३॥ तत्त थैथै

करत गति बनौ तन धरत पलटि डगमग ढरति मत्त गज गामिनी । धाइ नव रंग भरी उरसि राजत खरी उभै कलहंस हरि वंस घन दामिनी ॥४

(केदारो)

ए दौउ नाचत रास में रसिक प्यारी,
प्यारेलाल देखत सबहिनिकों मन हर्यौ ॥
नख शिख कुँवरि शिंगारि छवि उपजत भारी,
तत्ताथै बोलत डोलत लालन विहारी ।
मधुर मृदंग बजावत ललितारी सुधंग दै सीसों न्यारी ।
एक बजावत तार सों छवि उपजत न्यारी ॥
तिन में राधिका प्यारी लेत उरप तिरप ललनारी ।
लालन रीझ बारत कंठ की मुकता मालरी ॥ २
सुखद वृंदावन सघन फूले पुहपारी ।
त्रिविधि पवन रुचिकारी यमुना पुलिन रस सारी ॥
तैसेई सौभग राकारी प्राची दिशि भयो उडुराजरी ।
इह छवि कहन न आवै सुछ सारद की उजियारी ॥ ३
कंकन किंकिनी नूपुर बाजैंरी सुनि धुनि मुनि देह विसारी ।
रास में मगन रहत सदा घौ हारी ॥
चारु चरण रज किशोरदास शिर धारी ।
वृषभानु की दुलारी तिन पर तन मन बलिहारी ॥ ४

——

तूं आवरी हुँ हां को वयारि । प्यारे सों खेलति ताहै अति जो श्रम भयो, अपने अंचल लै लें सुकाऊँ सखीरी रुचिर वदन पर श्रम की वारि ॥ श्रवण नासिका भूषण उलट्यो बिथुरी अलकें बांध्यो सुधारि । सूरदास मदनमोहन सो मिलिवे कों सुख जाहे न भावे ताकों डारों वारि ॥ २

(विहागरो)

नव बन नव निकुंज नव बाला। नवरंग रसिक रसीलो मोहन विलसति कुंजविहारी लाला ॥ नव मराल जिति अवनि धरत पग कूजित नूपुर किंकिणी जाला। विठल विपुल बिहारी के उर पौं राजति जैसे चंपक माला ॥२

(मारू)

ललिताजू लता भवन उभकत सुख पावै।
हरखि हरखि लाड़िलो मेरी लाड़िली मनावे ॥ १
नख शिख तें करी शिंगार तलप रचि बनावे।
फूलनि की माला गूंथि फूलन सों पहिरावे ॥२
नेकु नेकु पिय पैं फेरि कंचुकी कसावे।
आछी आछी छबि सों दूलह दुलहिनी दुलरावे ॥ ३
हाव भाव करि कटाक्ष विहरत हुलसावे।
रति विनोद सहित लैं लै कंठ सों लगावे ॥ ४
तन सों तन मिले मन सों मन मिले रिझावे।
मुख सों मुख जोरि जोरि आंखिन सों हँसावे ॥ ५
किंकिणी की तानन सों मनमथ हि नचावे।
गति में गति लेत देत नूपुरनि बजावे ॥ ६
अति अगाध सुख ही में रूख न कछू लावे।
कलह केलि करिकै फेरि कुचनहिं परसावे ॥ ७
रसिकन की स्यामा पिय रसिकता जनावे।
सुख निधान सुख सुख निधि बरसावे ॥
हा हा करि चरणन गहि मानिनी मनावे।
तहा अद्भुत रस रीति सुरत कोटिक उपजावे ॥ ८
मानिनी मनाय प्रिय उछंग लैं बैठावे।
अतिहि प्रसन्न प्रिय सों निज अलकें सुधरावे ॥ ९

योवन के चाहिवे में पलकउ न लगावें ।
रस समुद्र वाढचौ मरजादा को गहावे ॥ १०
नवल सखी सखीयन में महलिनी कहावे ।
इह विनोद सजनी होय कुंजन में गावें ॥ ११
॥ इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला एकादशी क्षणदा

———

बारहवीं क्षणदा

गौर गोविंद नवलकिशोर सखो चित चोर छवीले ठाड़े हैं द्रुम की छँइयाँ । अधर धरे मुरली ऊँचे स्वर लीयें सुनिरी तोहे बुलावत है माईरी तू कत कहत नहिं याँ ॥१॥ विन हीं अंजन खंजन से नैना प्रिय मन रंजन रहे तिरछी ह्वै प्रिय मन महिवां । सूरदास मदनमोहन को ध्यान तेरो निशि वासर सखि कौन प्रकृति तो पहिवां ॥२

———

इहै छवि तोंहि पै बनि आवे ।
विना कंचुकी सहज सुभगता रसिक गोपालै भावें ॥
एक ओढ़नि ओढ़ हंस गति मनमथ मोद बढ़ावे ।
वदन सुधानिधि नव निकुंज को गहवर तिमिर नसावें ॥
तुव गुण सागर गिरिधरण लाडिलो श्रीमुख मधुरे गावें ।
श्री बल्लभ पद रज प्रताप तें कृष्णदास बलि जावें ॥

राग केदार

तू गोपाल बोली चलि वेगि मृगजलोचनी,
नव रंगी गिरि राज धरन मुदित रास रंगे ।
सप्त सुरस वेणु गान अद्भुत झप ताल मिल्यो,
गावत केदार राग युवति यूथ संगे ॥
सुरति देन कों कुवर नागरि विचित्र नार,
और नहिं भुवन मांहि नागरी सुभंगे ॥

नृत्यत गति मूर्छादिक ताल सहित तत्त थेई,
नाहिन रस चाहि देत बिना तोहे उपंगे ॥
उरप तिरप विहिन मानो निरखि थकित व्योम विमान,
सगण चंद विथकित भयो रूप मान भंगे ॥
कृष्णदास स्वामिनी मनोज वेष राधिके
रसिक कंठ लागि सुख देत अभंगे ॥

——

नृत्यत रास मंडल मध्य राधाजू रूप गुन अगाधा कछु छवि कहि न परत। चलत ललित गति सुभाई अरुण वरण झाई मिलि-मिलाई मानों तहाँ रिझ रिझ धरणी जीम धरत ॥ तिरपी लेन में मणि के भूषण जगमगात मानो अनेक अलात कंचन दंड सों लागि फिरत। नंददास प्रभु प्यारी पद की प्रेम लटकि हरि कों हिय हरत ॥ २

(केदारो)

श्री वृषभानु नंदिनी नाचत लालन गिरिधरण संग। लाग डाट उरप तिरप रास रंग राख्यो। झप ताले मिल्यो राग केदारो सप्त सुरनि औधरवर सुघर तान गान रंग राख्यो ॥ पाइ सुख सुरति सिंधु भरत व्यविध रिद्ध अभिनव दल सत सोहाग हुलास रंग राख्यो। बनिता शत यूथप पिय निरखि थकित सगणचंद बलि-हारी कृष्णदास सुजस रंग राख्यो ॥२

(केदारो)

आज मोहन रच्यो रास मंडल मध्य राधा रूप गुन अगाधा कहि न परत। चलत ललित गति सुभाव अरुण चरण झाँइ झिलमिलाई सुंदर पुलिन सुभग सुखदायक राजत ॥ १ ॥ नव नव घन अनुराग परसपर खेलत कुंवर नागरी नायक शीतल हंस सुता रस बीचिन परसि पवन सीकर मृदु वरसत। बर मंदार कमल चंपक कुल सौरभ सरस मिथुन मन हरषत। सकल

सुधंग बिलास परावधि नाचत नवल मिले सुर गावत ।। मृगज मयूर मराल भ्रवर पिक अद्भुत कोटि मदन सिखावत । निर्मित कुसुम शयन मधुपूरित भाजन कनक निकुंज विराजत ।। रजनी मुख रास परस्पर सुरत समर दोऊ दल राजत । मिट कुल नृपति किसोरी कर धृत वुधि बल नीवि वंधन मोचत ।। नेति नेति वचनामृत बोलत प्रणय कोप प्रीतमनहिं सोचत । हित हरिवंस रसिक ललितादिक लता भवन रंध्रन अवलोकत ।। अनुपम सुख भर भरित परस्पर असु आनंद वारि कंठ गहि दृग रोकत ।।

इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला द्वादशी क्षणदा ॥

—०—

तेरहवीं क्षणदा

शची नंदन रस रूप ।
प्रकट गौर वरण तन भावित अंतर स्याम स्वरूप ।।
सहज सुवास हास रस आनन लोचन कमल स्वरूप ।
हेरत सहज वेधत नागरि हिय उर नैनन के सरूप ।।
भाव तिलक श्वेत बसन कटि पद तल कमल स्वरूप ।
पद बिन्यास चारु हस्तक गति मोहत जगत स्वरूप ।।
हरि हरि बुलावति अंगुरी फिरावति उपमा नहीं सरूप ।
वरसत प्रेम छेम सकल जीव अंग अंग मदन स्वरूप ।।

—०—

वृषभानु नंदिनी मधुर कल गावे । बिकट ओघर तान चर्चरी ताल सों नंदनंदन मनसि मोद उपजावें ॥ प्रथम मज्जन चारु रुचीर कज्वल तिलक श्रवण कुंडल वदन चंदनि लजावें । सुभग नक बैंसरी रतन हाटक जरी अधर वंधुक दशन कुंद चमकावें ॥ बलय कंकन चारु उरसि राजत हार कटि व किंकिणि चरण नूपुर बजावैं । हंस कल गामिनी मथत मद कामिनी नखनि

मद यंतिका रंग रुचि द्यावें ॥ नृत्य सागर रभस रहसि नागरि नवल चंद चाली विविध भेदनि जनावे । कोक विद्या विदित भाव अभिनयनिपुन भ्रु विलासनि मकर केतनि नचावे ॥ ४ ॥ निविड़ कानन भवन बाहु रंजित रमन सरस आलाप सुख पुंज बरसावे । उभै संगम सिधु सुरत पूषण वंधु द्रवत मकरंद हरि-वंस अलि पावें ॥५

विहागरो

छबीले नील घन की पूतरी क्रीड़त वृंदावन माहीं । विविध भूषण धरे वंशी करतल करें चलत देखत परछाईं ॥ सबहि को हियो करसें शोभा वदन बरसें गोपी लोचन चातक पीवत जाहीं । नंददास प्रभु एक दामिनी सी ठग ठाड़ी ताकें गरे गरबाही ॥ २

(कल्याण)

आजु नागरी किशोर भाँवतो विचित्र जोरि कहा कहौं अंग अंग परम माधुरी । करत केलि कंठ मेलि बाहु दंड गंड गंड सरस रास लास मंडली जुरी ॥ श्यामसुंदरी विहार :बाँसुरी मृदंग ताल मधुर घोष नूपुरादि किंकिणी चुरी । देखत हरिवंस आली नर्तनी सुधंग चाली वारि फेर देत प्राण देह सों दुरी ॥३

(मालव)

माधौ रुचिर रमित रच्यो रास । कुसुमित कानन सब द्रुम वेलिनि चकित उडुप त्रिकास ॥ यमुना तीर भीर खग मृग की मंद सुगंध सुवास । युवति जुगल युगल प्रति माधौ करति विनोद विलास ॥ ताल पखावज रवाव बासुरी उपजत तन तरास । नृत्यत गोपी करत कौतूहल लोचन पद्म पलास॥ वरसत कुसुम इंद्र सुरपाता संकर तजि कैलास । कृष्णदास प्रभु गिरि-धर क्रीड़त कथा कथित शुक व्यास ॥४

(सोरठा)

सांवलिया रंग भीने ।
मधुर मधुर मुरली वाजे काम सिखे व्रज दीने ॥
मोरके चन्दा भूषण भूषित पीत पीतांवर धारी ।
गोप वधू व्रज मंडल मंडित रास रच्यो वनवारी ॥
यमुना के तट शरद जामिनी पूरण चंद्र प्रकासी ।
कमल कली रस वल्लभ वाले भंवर कन्हैया वासी ॥
श्री रंग रूप रची व्रजसुंदरी रैंन विहात न जानी ।
नाम देव के स्वामी अंक आलिंगित प्रेम समुद्र समानी ॥४

———

जमुना के पुलिन में खेलत मुरारि। रास मंडल रच्यो संग व्रज नारी॥ कंकण किंकिणी नूपुर झनकार। बाजत मृदंग वीणा झांझ ढप तार॥ तत्ता थेइ तात्थेइ तार अपार। पीतांवर छवि बारण पार॥ कोकिला कीर ध्वनि मधुप गुंजार। विविध पवन वहे मलय सुढार॥ सब गोपिन मिलि कीयो है सिंगार। तिन संग विहरत नंदकुमार ॥ रीझ पहिरावत मुक्ता माल। प्रेम मगन भये नंद के लाल॥ गोकुलकेवासी श्रीकृष्णमुरारी। यशुमति नंदन राधा उर हार॥ नाचत गावत गोपी सुधंग अपार । नामदेव के स्वामी वृंदा विपिन विहार ॥८

(विहागरो)

खेलत रास रसिक नागर ।
मंडित नव नागरी रसिक वर रूप को आगर ॥
विकच वदन वनिता राजत तैसे सरद अमल ।
राका सुभग सरोवर मधि मानों फूले कमल ॥
नव किसोर सुंदर साँवरे अंग वलित ललित व्रजवाला ।
मनौ कंचन मणिमय मंजुल वृंदावन पहिरी माला ॥

या छवि की उपमा कहिवे को ऐसो कवि को धौं पढ्यौ है ।
नंददास प्रभु कौ कौतुक देखि काम के काम बढ्यो है ॥४

विहागरो

साँवरे प्रीतम के संग राजत रंग भीनि भामिनी । नृत्यति चंचल गति द्युति न कहि परति लहलहानि सीखि जहा दामिनी । जुवति मण्डल मध्य रूप गुण कि अवधि यातें सिद्धि पावें सब संगीत की स्वामिनी ॥ राग रागिनी की रानी तत्ताथेइ कलदानी कछुक सीखि कोकिल की कामिनी ॥ उरप तिरप मान अति अद्भुत गान मोहे खग मृग उड चंदा जामिनी । नंददास रीझ जहाँ आपनों पो वारयो तहाँ रमणि मनि रमा अभिरामिणी ॥

विहागरो

आज अति श्रमित विहारिणी जानि ।
तांडव रास नृत्य मंडल तें उर धरि प्यारी आनि ॥
श्रम जल पौंछत कर पंकज सों बीजत अंचल पानि ।
वीरी देत बनाय वदन विधु प्रेम चतुर अभिमानि ॥
पौढ़त किशलय तलपहिं राधा निज उर ऊपर आनि ।
हरिवल्लभ वीजत पद सेवत आलि सहित सयानि ॥

———

सुथरी गुलावन की पांखुरी सजी है सेज तामें मिले अंग अंग सोभा सरसात है । सुघर समाज सिरताज साज काज आज एक एक बात भाँति भाँति दरसात है ॥ तन मन हरण करण गुण रूप भूप रीझ रीझ भीजि भीजि हियो हरसात है । ललितादिक नैंन हित चातृग विचित्र एन पिय प्यारी संग रस रंग वरसात है ॥ २

इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला त्रयोदशीक्षणदा ॥

——०——

चौदहवीं क्षणदा

(बिहागरो)

अचरज रस सागर की भंगी ।
खेलत सुरति रण तजि रमणीगण लें चले राधा संगी ॥
नख शिख अंग अनंग महारस राधाधर मधु पाने ।
रसिक मुकुट सुख मत्त और युवति जन जू न जाने ॥
कुसुम सिंगारणि वृषभानुनंदिनी वदन वदन विधु राखि ।
उरधरि फिरत तरणि तनयातट मनमथ भूपति साखि ॥
तबहुँ अचानक हरिवल्लभ अति कौतुक भर अति धीर ।
राधा तजि वन में दुरि देखत विरहानल की पीर ॥

—c—

मोहन मदन त्रिभंगी । मोहन मुनिमन रंगी ॥
मोहन मुनि सघन परमानंद गुण गंभीर गोपाला ।
सीस किरीट श्रवण मणि कुंडल उर मंडित वनमाला ॥
पीतांवर तन धातु विचित्रित कल किंकिणी कटि चंगी ।
नखमणि तरणि चरण सरसी रूह मोहन मदन त्रिभंगी ॥१
मोहन वेणु वजावे । यह रव नारि वुलावे ॥
आईं व्रज नारि सुनत वंसीरव गृहपति वंधु विसारे ।
दरसन मदन गोपाल मनोहर मनसिज ताप निवारें ॥
हरसित वदन वंक अवलोकनि सरस मधुर धुनि गावे ।
मधुमय स्याम समान अधर धरि मोहन वेणु वजावे ॥२
रास रच्यो वन माहीं । विमल कलप तरु छाईं ॥
विमल कलप तरु तीर सुपेसल सरद रैंन वर चंदा ।
सीतल मंद सुगंध पवन वहे तहाँ खेलत नंदनंदा ॥
अद्‌भुत ताल मृदंग मनोहर किंकिणी शब्द कराहीं ।
यमुना पुलिन रसिक रस सागर रास रच्यो वन माहीं ॥३

देखत मधुकर केली। मोहे खग मृग वेली ॥
मोहे खग मृग धेनु सहित सुर सुंदरि प्रेम मगन पट छूटे।
उडगण चकित थकित शशि मंडल कोटि मदन मन लूटे ॥
अधर पान परिरंभन अति रस आनंद मगन सहेली।
हित हरिवंस रसिक सुख पावत देखत मधुकर केली ॥

(कल्याण)

करत हरि नृत्य नव रंग राधा संग लेत नव गति भेद चर्चरी ताल के। परस्पर दरस रस मत्त भये तत्त थै थै वचन रचन संगीत सु रसाल के ॥ फहरत वरह वर ढरहरत उर हार भर हरत भंवर वर विमल वनमाल के। खसत सित कुसुम सिर हसत कुंतल मनौं लसत कल झलमलत स्वेदकण भाल के ॥ अंग अंगनि लटकि मटक भंगुर भौह पटक पटतार कोमल चरन चाल के। चमकि चल कुंडलनि दमक दसनावली विविध व्यंजित भाव लोचन विसाल के ॥ वजत अनुसार दृभि दृमि मृदंग निनाद झमकि झं झंकार किंकिणी जाल के। तरल तरफत तड़ित नील नव जलद में यों विराजत प्रिया पास गोपाल के ॥ ब्रज युवति यूथ अगनित वदन चंद्रमा चंद्र भये मंद उद्योत तिहिं काल के ॥ मुदित अनुराग वस राग रागिनि तान गान गति गर्व रंभादि सुरवाल के ॥ गगन चर सगन रस मगन वरसत फूलवारि डारत रतन जनन भरि थाल के। इक रसना गजाधर न वरनत वने चरित अद्भुत कुँवर गिरिधरन लाल के ॥

—०—

आजु वन नीको रास बनायो। पुलिन पवित्र सुभग जमुना तट मोहन वेनु वजायो ॥ कल कंकण किंकिणी नूपुर धुनि सुनि खगमृग सचु पायो। युवतिन मंडल मध्य स्याम घन सारंग राग जमायो। ताल मृदंग उपंग मुरज डफ मिलि रस सिंधु

बढ़ायो ॥ विविध विसद वृषभानुनंदिनी अंग सुधंग दिखायो। अभिनय निपुन निपुन लटकि लट लोचन भृकुटि अनंग नचायो॥ ताताथेई ता थेई धरति नूतन गति पति ब्रजराज रिझायो॥ सकल उदार नृपति चूड़ामणि सुख वारिद वरसायो। परिरंभन चुंवन आलिंगन उचित युवति जन पायो॥ वरसत कुसुम मुदित नभनायक इंद्र निसान बजायो। हित हरिवंश रसिक राधापति जस वितान जग छायो॥

—०—

दोउ जन मंडल नृत्य करैं।
लटकनि ललित चलन गति चंचल दीन्हे भुजा गरे॥
वेनु वीना किंकिणी नूपुर धुनि वाजत सुर मधुरैं।
हित अनूप ललिदादिक लोचन आनंद वारि भरैं॥

—८—

कैसे नीके नृत्य करत मंडल परिमोहन मदन गोपाल। संग लीये वृषभानुनंदिनी वय गुण रूप रसाल॥ मुकुट की लटक पीतांवर की छवि कुंडल किरण विशाल। नटवर वपु गति कटि किंकिणी रव मोहे शब्द मराल॥ चिवुक चारु गहे अंस वाहु दिये रिझावत प्यारी लाल। वलया वलित कर ललितादिक सखि ताता उत्थगति ताल॥ वंसी कलरव मोहे खग मृग मोही व्रज की वाल। छुटी अलक गंडन ढिग मानो भ्रमर भ्रमत छवि जाल॥ अंग अंग बहुरंग भरयोरी रसिक राय नंदलाल। याही अमित माधुरी अटक्यो हित अनूप तिहि काल॥५

(विरागरो)

जय जय वृंदा विपिन पुरंदर। रसिक शिरोमणि मधुर रूप गुण तीनहुँ लोक उजागर॥ मंडल रास नृत्य अति मंडित दोऊ तुम रस सागर। रजनी बहुत गई कुंजे सुख खेलन को अव अवसर॥ सहचरी वचन सुनत ही कुंजे चले दोऊ मनोहर।

वल्लभ आलि सेवा सुख पावै पौढ़त ही नव नागर ॥

विहागरो ॥ यात्रा ॥

मदनमोहन संग मोहिनी कुंज सदन में विलसत नवरंगे । प्राण प्यारी प्राण प्यारो लटपटाय पग रहे आधे आधे वचन कहत माते अनंगे ॥१॥ परसत गह चिवुक विद्रु चाहि रहत वदन इंदु हँसि हँसि हँसि जात कबहु लेत उछंगे । गोविंद बलि विचित्र जोरि नवकिसोर नवकिसोरी गावत केदारो राग सुघर तान तरंगे

इति गीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला चतुर्दशी क्षणदा ॥

--०--

पन्द्रहवीं क्षणदा

(कल्याण)

सारद शशि किरण पुंज रंजित निज विपिन कुंज देखि रमण साभिलास रास रंग सौं । रसिक मौलि श्री गोपाल मंजु वेश पुहपमाल वनि ठनि वनि आये एक मुरली संग सौं ॥१॥ राखि वदन चंद्र कोर अधर सुधा देइ अकोर पठइ अति वेग चतुर दूति वंसिका । जाहि तवहि एक काल घर घर सब गोप बाल कान पकरि पकरि मदन मंत्र संसिका ॥२॥ विवश भयो तबहि देह बिसरयो सब गेह नेह मनहु लोक लाज निकसि लाज तें गई । मृगमद सों नैंन अंजि यावक रस भाल राजि कज्जल उर कंठ खोलि किंकिणी दई ॥३॥ अस्त व्यस्त दसन वेस आई सब विपिन देश मानहु अनुराग राशि रूप धारिणी । मोहन नव जलद अंग काम केलि सुख तरंग भामिनी मानो दामिनी मिलि सुरत भारिणी ॥४॥ सुनहु आये गोप राम अवत इहाँ कौन काम रजनि घोरि तुमहु भोरि कुल कुमरिका । तुमहु सुनहु रसिक राज वसत इहाँ कौन काज नंद सूनु जिनकी रीति धर्म धारिका ॥५॥ खेलत हम संग रहित केवल मुरली समेत वेगि

चलहु कामिनी जन निज पतिनु पाश को। आई हम सखिन संग चाँदिनी विलोकि रंग याइते रहसि मुरलिसों विलासको ।।६।। कौन रीति हाय हाय स्त्रीजन हमें नाहि सुहाय जाहुते दूर पुरुष धर्म हारिका। खेलति जहाँ युवति राति नहिं रहे तहाँ पुरुष जाति एकै कंस राजनीति शास्ति कारिका ।।७।। धरत उरहि गवै भाव हमहूँ को डर देखाव कोटि कंस मारहुँ एक अंगुली वल सों। मारत तुम बहुत गाल जानत हम सर्व काल काहेकों हठ करत कपट भाखन छलसों ।।८।। आई तुम अंग साज हमसों कछु लरन काज आव लरें सबसों किधौं एक एक सों। इति छुभाखि रसिक वीर युवतिन की महा भीर मध्य परे पकरि गरोरन अनेक सों ।।६।। सबहि भाम शर कटाख डारत सब लाख लाख तबहिं कवच कंचुक हरि भेदि नखर हाने। बांधत भुज भुजग पास नाहिं रहत अंग वास मधुप यूथ राजत तहां सुरत समर गानें ।।१०।। खोलत मणि जटित रसन निविड़ करत अधर दशन पीवत मकरंद मधुर वदन कमल के। हरिवल्लभ आलीकुल हेरि हेरि मोद अतुल पावत गुण गावत रस मत्त जुगलके ।।११

(पंचम)

बने आज नंदलाल सखि प्रेम मादक पिये संग ललना लिये जमुन तीरे। फूल केसरि कमल मालती सघन वन मंद सुगंध शीतल समीरे ।। नीलमणि वरण तन कनक चित्रित वसन परम सुंदर चरण परसि माला। मधुर मृदुहास परकास दशनावली छवि भरे इतरात दृग विशाला ।। किये चंदन खौरि वदनारविंद मकरंद लुवधे भ्रमर कुटिल अलके। हलत कुंडल लटकि चलत जब स्याम घन मणिन की कांति कल गंड झलकें ।। एक चंपक तनी कृष्णरस माति कर राग पंचम संग लागि सोहैं। एक हरि मुख निरखि धरि रही ध्यान मनो चित्र सम भई हरि हियो मोहैं ।।

एक स्यामे हेरि सुभग लोचन फेरि विहसि बोली भले कान्ह कपटी। एक सोधे धरी छुटे वारनि खरी चंद्रमुखी कंचुकी बिना रीझ लपटी ॥ एक दामिनि सी भुज मेलि ग्रीवा बात कहत मिस आय मुखसों मुख लगायो। एक नव कुंज में खेंचि रही कटि बंध आपने लाल चित चोर पायो ॥ एक स्यामा कनक कंज वदनी प्रेम मकरंद भरी हरि निरखि विकसी। ताके रस लुबध रहे लपटि स्यामर भ्रमर प्राणप्यारी भुजनि बीच जुलसी॥ रसिकमणि रंग भरे विहरि वृंदाविपिन संग सखि मंडली प्रेम पागी। कहि भगवान हित रामराय प्रभु सों मिलि सोई जन जाने जाकों लगन लगी॥

विहागरो

अचरज रस सागर की भंगी। खेलि सुरति रन तजी रमणीगण लै चले राधा रंगी ॥१॥ नखशिख अंग अनंग महारस राधाधर मधु साने। रसिक मौलि मुखमत्त और युवतिन मनमें नहिं आने ॥२॥ कुसुम सिंगारिणि रमणि सिरोमणी सुख कमले मुख राखि। उर धरि फिरत तरणि तनयातट मनमथ भूपति साखि ॥३ तबहुँ अचानक हरिवल्लभ अति कौतुक भरि अति धीर। राधा तजि वन में दुरि देखत विरहानल की पीर॥

विहागरो

तुम पर सबै हम वारियां वारि डारियां। उचित नहीं हमें छाडि जात पिय जानत पीर हमारियां॥ नंदकिसोर स्यामघन सुंदर चातक गोप कुमारियां। ढूँढत वन बूझत द्रुम वेली नाथ हो नाथ पुकारियां ॥२॥ तुमबिनु दुःसह दुःख अति बाढ्यो लाग्यो मीत गुहारियां। दरशन देह ऐसे जिन मारो हमें हुँ तो तुम्हें प्यारियां। नटवर वपु अति धीर महा भुज अंग सुधंग सुधारियां। सुंदर मुख हम तन हँसि हेरनि वनि झलकें घुंघुरारियां॥ उर विसाल

वनमाल विराजति चंद्रिका सीस वारियां । रूप सुधा लगि नैनन वेची दासी भई तुम्हारियां ॥ प्रकटे आये प्रीत मण्डन पिय जिय उठी ब्रजनारियां । मुक्तामाल पीतांवर धारें नम्र अखियां अनियारियां ॥६॥ मदनमोहन गोहन सों ही ब्रजसुंदरी रूप उजारियां। जमुना पुलिन कुंज कुसुमित पिय सुख वरसा विस्तारियां॥७ नंदलाल रस मूरति तकि मुनि सुरवधू देह विसारियां । रामराय प्रभु गिरिधर भगवान दास बलिहारियां ॥८

(केदारो)

आली रास मण्डल मध्य नृत्य करत मदनमोहन अधिक सोंहन लाडिली रूप निधान । चरण चारू हस्त भेद नृत्यत आछी भाँतिन मुख हास भ्रुव विलास लेत नैंन ही में मान ॥१॥ गावत वेनु बजावत दोउ रीझि परस्पर रिझावत आकौं भरि भरि लेत सुख पावत उरप तिरप होइनि विकट तान । परमानंद स्वामी और निरखत ललितादिक वारत निज प्राण ॥२॥

(केदारो) इकताला

रासमंडल मधि रंग रह्यो नृत्यत वाह जोटी गोपी मिलि कान्ह । पाइन नूपुर वजावे हस्तक भेद बतावें गिडिगिडि ताथै ताथै लेत उरप तिरप मान ॥ वेनु धुनि नाद छई पचन की गति मंद भई जमुना थकित भई सुर नर मुनि टरथो ध्यान । रस समूह राधा मोहन की जोरी पर वारत जन हरिया अपने तन मन प्राण ॥

(विहागरो) इक०

सरद सुहाई हो यामिनी भामिनी रास रच्यौ । वंसीवट जमुनातट शीतल मंद सुगंध समीर सच्यौ ॥ उरप तिरप गति लेत सुलप अति निरखन विथक्ति मदन लच्यौ ॥ वाजत ताल मृदंग राधा संग मोहन सरस सुधंग नच्यौ ॥ कोक कला संगीत रीति रस रूप मधुरता गुनन वच्यो । भ्रकुटी विलास हास रस वरसत व्यास परम सुख नैंन सच्यौ ॥३

(नट राग) चौताला

उरझी कुंडल लटक बेसरसों पीतपट वनमाला बीच आनि उरझें हैं दोऊजन। नैंननि सों नैंननि प्राण प्राणन सों अरझि रहे चुटकीलि छबि देखें लटपटात स्याम घन॥ होड़ा होड़ी नृत्य करै रीझि रीझि अंक भरे तत्ताथै तत्ताथै रटत भए मगन। सूरदास मदनमोहन रासमंडल में प्यारी के अंचल लै लै पौंछत है श्रम कन ॥२

विहागरो

जय जय जय गोप नारि केलि कौतुकी। रास नृत्य पूर्ण जानि करत आजु वेनु पानि वनविहार लीला अति चित्र हेतुकी ॥१॥ वाम वाहू प्रिया अंस झलमलात प्रिया वतंस वाम पानि पल्लव कुच कुंभ में धरे। मधुर मंद मंद चलत अंग अंग वसन हलत वाजत मनि किंकिणी अति माधुरी भरे॥ मंजु कुसुम रचित वेस करत कुंज में प्रवेस करक कदल अदल कांति मदन वर्षिनी। मृदुल तलप शयन केलि वल्लभ सेवा सहेलि समय जानि निकसि वलि जालदर्शिनी ॥३

विहागरो

दम्पति सेज में रसमसे।
दामिनी पर घन रु घन पर दामिनी ज्यौं लसे ॥१
नव वाल लालन भुज मृणालन गाठ फंद निकसे।
अधर विंव सुदशन दाड़िम अरस परस निदसे ॥२
नैंन नैंननि हीये हीये सों जंघ जुगल निगसे।
भनित वचन सुनृत्य सुनि सुनि मंद मंदनि हंसे ॥३
केलि सागर माझि दोउ चौंप चौंपनि धसे।
रतन भूषण कुसुम माला अंग अंगनि खसे ॥४
प्रेम पंक अगाध में ललितादि गज मन फँसे।
नित्य हित व्रजलाल हीये इहि विधिसों वसे ॥५

इति श्रीगीतचिंतामणौ पश्चिमविभागे शुक्ला पंचदशी क्षणदा॥

व्रजभाषा में प्रकाशित प्राचीन पुस्तकें—

१. गदाधरभट्टजी की वाणी (राधेश्याम गुप्ताजी से प्रकाशित) ॥)
२. सूरदासमदनमोहनजी की वाणी ,, ।॥)
३. माधुरीवाणी (माधुरीजी कृता) ।=)
४. वल्लभरसिकजी की वाणी ।=)
५. गीतगोविन्दपद (श्रीरामरायजीकृत) ।)
६. गीतगोविन्द (रसजानिवैष्णवदासजी कृत) ।)
७. हरिलीला (ब्रह्मगोपालजी कृता) =)
८. श्री चैतन्यचरितामृत (श्रीसुबलश्यामजी कृत) ४॥)
९. वैष्णववन्दना (भक्तनामावली) (वृन्दावनदासजीकृता) =)
१०. विलापकुसुमाञ्जलि (वृन्दावनदासजी कृता) ।)
११. प्रेमभक्तिचन्द्रिका (वृन्दावनदासजी कृता) ।)
१२. प्रियादासजी की ग्रन्थावली ।=)
१३. गौराङ्गभूषणमञ्जावली (गौरगनदासजी कृता) ।)
१४. राधारमणरससागर (मनोहरजी कृता) ।)
१५. श्रीरामहरिग्रन्थावली (श्रीरामहरिजी कृता) ।-)
१६. भाषाभागवत (दशम, एकादश, द्वादश) (श्रीरसजानि-वैष्णवदासजी कृत) १)
१७. श्रीनरोत्तमठाकुरमहाशय की प्रार्थना ॥)
१८. संप्रदायबोधिनी (कविवरमनोहरजीकृता) =)
१९. व्रजमण्डलदर्शन (परिक्रमा) १)
२०. भाषाभागवत (महात्म्य, प्रथम, द्वितीय स्कंध) ॥)
२१. कहानीरहसि तथा कुंवरिकेलि (श्रीललितसखीकृत) ।)
२२. ब्रह्मसंहितादिग्दर्शिनीटीका की भाषा (श्रीरामकृपाजी कृता) ॥=)
२३. किशोरीदासजीकी वाणी ॥=)
२४. गौरनामरसचम्पू (कृष्णदासजीकृता) ॥=)
२५. क्षणदागीतिचिंतामणि (मनोहरदासजी) ॥)
२६. अष्टयाम (श्रीवृन्दावनचन्द्रदासविरचित) १।)
२७. श्रीचैतन्यभागवत (आदि, अन्त्यखंड) ५)

मुद्रक—रमनलाल वंसल, पुष्पराज प्रेस, मथुरा।

॥ ॐ ॥

उत्तराखंड तीर्थ यात्रा

साधु--प्रज्ञानाथजी विरचिता

केदार संगम गंगोत्री

पो०:--उत्तरकाशी (टिहरी-स्टेट)